ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

फरवरी, 2021

- जादू घर
- फूलों में रंग
- बिल्ली का बच्चा
- मेघों से मुलाकात
- प्रकृति के वेंटिलेटर

मुंबई का तुकाराम ओम्बले मेमोरियल

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

फरवरी 2021
वर्ष : 1, अंक : 2

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

प्रकाश मनु : बिल्ली का बच्चा 8, रेनू मंडल : तितली की सैर 12, गोविन्द भारद्वाज : बौना बहादुर 16, अनिता भटनागर जैन : प्रकृति के वेंटिलेटर 24, डॉ. मोहम्मद अरशद खान : हवेली के भूत 30, इंद्रजीत कौशिक : रानू की सूझबूझ 34, आशा शर्मा : परीक्षा का मंत्र 40, सुशील दोषी : जंगल से सबक 44

कविताएं

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : सरस्वती वंदना 5, घमंडीलाल अग्रवाल : अब दादी भी 11, अरविंद कुमार 'साहू' : फूला केला 27, गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' : ये तितली 27, राजेन्द्र श्रीवास्तव : खाकर भागे, लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव : अच्छा लगता 28, डॉ अलका अग्रवाल : धूप नरम-गरम, मेराज रज़ा : जूँ 29

जानकारी

मोनिका अग्रवाल : फूलों में रंग 6,
विवेक शुक्ला : तुकाराम ओम्बले मेमोरियल 14,
डॉ. शील कौशिक : मेघालय में मेघों से मुलाकात 18,
सीमा सहाय : रंग-बिरंगी तितलियां 32,
विरासत : इंडियन म्यूजियम, 38,
आइवर यूशिएल : जीव-जंतुओं का अद्भुत संसार : 42,

विविध

आपकी बात 4, चित्रकथा : स्नैकी का आईडिया 21,
प्रेरणा : मोहम्मद सिराज, ऋषभ पंत 36-37,
हंसना जरूरी है 43, जरा सोचो 46,
पुस्तक परिचय : 58,
संस्मरण : नूरे निशां : मुश्किल हुई आसान 60,
अनिल जायसवाल : सरस्वती पूजा की यादें 61,
खेल : साइकिलिंग 62, धन्यवाद ज्ञापन 63

बाल मंच

राइजिंग स्टार : अन्वी घिल्डियाल , लिली यादव 48-49 , चित्र : प्रियांशु गर्ग, आन्या, कुनिका कौशिक, पारुल वॉग, आर्या सतीश भोयर, सान्वी, सिद्धी भंडारी, पर्व जैन, आरजू गुप्ता, पावनी गुप्ता, शाम्भवी गुप्ता, आकृति शुक्ला 50-53, कहानी : अक्षज भारद्वाज : नटखट बच्चा 54, आराध्य गौरव : बबलू का सपना 55, डायरी : अंकित कुमार 54, कविता : दयाना ग्रोवर : मस्त कलंदर 55, काजल धारीवाल : अरमान, अयाति ओझा : किताबें 56, अनुपम 'अनुज' : मैं न मानती हार, आयुष्मान पात्रो : तितली रानी 57

आत्मविश्वास से बड़ा साथी कोई नहीं

देखते-देखते नए साल का पहला महीना भी खत्म हो रहा है। फरवरी का महीना किसी के लिए उत्सव बनकर वसंत के रूप में आता है, तो बड़े लोग फाइनेंशियल ईयर का अंत नजदीक देखकर कमर कसकर अपने काम में अपेक्षानुरुप परिणाम पाने या देने के लिए कमर कस लेते हैं।

बच्चों के लिए तो यह महीना कमर कसने के लिए ही होता है। वे कमर कसते हैं, परीक्षा में बेहतर परिणाम लाने के लिए। फरवरी और मार्च उनसे साल भर की पढ़ाई का लेखा-जोखा लेने लिए परीक्षा के रूप में जज बनकर आता है।

पर पिछले साल की पढ़ाई तो रस्म से कुछ ही बढ़कर रही। शुरुआत में खाली बैठे, फिर ऑनलाइन क्लासेज। पर क्या ऑनलाइन की पढ़ाई बच्चों को अगली कक्षा के लिए तैयार करने में सफल रही? इस सवाल का जवाब तो अगले साल फिर से स्कूल जाकर पढ़ने पर ही तुम सबको मिलेगा।

बहुत बच्चों ने घर से हो रही पढ़ाई को खेल-खेल में लिया। रस्मी तौर पर पढ़ाई की और पेपर दिए। पर अपनी क्षमता पर विश्वास करने वाले बच्चे इस मुश्किल दौर में भी खुद को भविष्य के लिए तैयार करते रहे। पढ़ाई के साथ खाली समय का उपयोग अपनी दक्षता को बढ़ाने में किया। उन्हें खुद पर विश्वास था। उन्हें मालूम चल चुका था कि उनके लिए आत्मविश्वास से बड़ा साथी कोई नहीं है।

आत्मविश्वास और अतिविश्वास में बारीक अंतर है। आमतौर पर लोग आत्मविश्वास के नाम पर अतिविश्वास के शिकार हो जाते हैं, उसी तरह, जिस तरह आत्मविश्वास बढ़कर कब बदतमीजी का रूप ले लेता है, समझ ही नहीं आता। इससे बचने का तरीका है कि जब मुश्किल घड़ी आए, अपने से बड़े या अपने से सक्षम से मार्गदर्शन लिया जाए।

आत्मविश्वास की कमी आमतौर पर अंतर्मुखी या दब्बू बनने पर मजबूर कर देती है। अभी कुछ दिनों पहले मैं घर लौट रहा था। दो लड़कियां स्कूल से लौट रही थीं, दसवीं कक्षा की थीं क्योंकि दसवीं और बारहवीं के बच्चों के लिए स्कूल खोल दिए गए हैं। सोसाइटी में उनके घुसते ही उनके एक दोस्त ने कमेंट किया, "पढ़ाकू आ गए।"

उनमें से जो पढ़ाकू लड़की थी, वह दब्बू प्रकृति की थी। वह कमेंट का जवाब नहीं दे पाई। पर उसकी सहेली चुप न रही। उसने मुड़कर बोला, "हां, स्कूल में पढ़ाई करने वाले बच्चों को ही बुलाया गया था।"

उसने बदतमीजी नहीं की, बस प्यार से अपनी हाजिर-जवाबी से सामने वाले को निरुत्तर कर दिया। आसपास के लोग उसकी बात सुनकर हंस पड़े और मजाक उड़ाने वाले बच्चे खिसियानी हंसी हंस पड़े।

तो, जहां जरूरत हो, वहां अपने पर विश्वास रखना तुम्हें बहुत आगे ले जा सकता है।

पायस का दूसरा अंक तुम्हारे सामने है। पढ़कर अपने दोस्तों को भी पढ़वाना। अपनी राय जरुर बताना।

तुम्हारा

अनिल जायसवाल

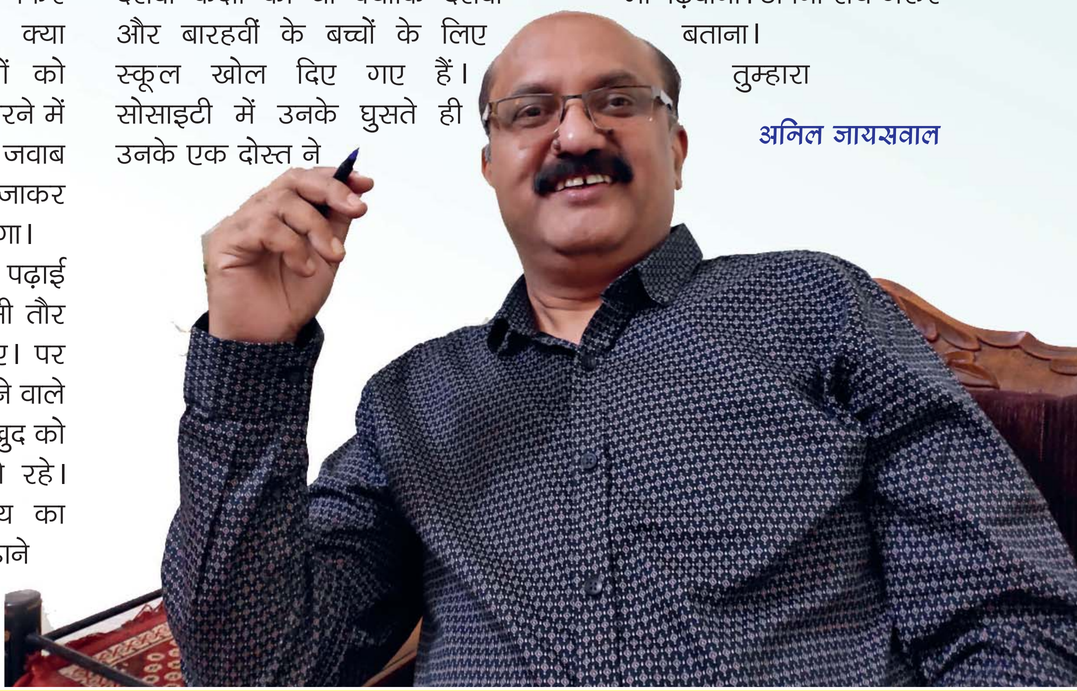

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

प्रवेशांक, जनवरी 2021 अंक पर कुछ चुनी हुई प्रकिक्रियाएं

नंदन में सहयोगी रहे अनिल जायसवाल जी ने बच्चों की आनलाइन पत्रिका 'पायस' शुरू की है। पहला अंक, नए साल के पहले दिन। बहुत-बहुत बधाई।

–क्षमा शर्मा

सामग्री बहुत अच्छी है। चित्र कमजोर हैं, खासकर बहुत अधिक तीखे रंग लगा दिए गए, जो नेचुरल नहीं लग रहा। कवर पेज भी बहुत स्टीरियो टाईप है, 26 जनवरी परेड से ज्यादा संविधान है। काश, आज़ाद हिन्द फौज पर ही होता। बस, रंगों को इतना भादाकु न दें। बाकी बहुत बढ़िया पत्रिका।

–पंकज चतुर्वेदी

प्रिय अनिल, प्रवेशांक अद्भुत! चित्रांकन के क्या कहने। तुम अच्छे सच्चे संपादक हो। बधाई के साथ हार्दिक शुभ कामनाएं।

–देवेंद्र कुमार

पायस के प्रवेशांक को पढ़कर बाल साहित्य के अनुरागियों में सहज ही इसके प्रति आत्मीयता उत्पन्न होगी। पत्रिका अनूठी है। अनिल जी के अनुभव का सर्वोत्कृष्ट रूप इसमें देखा जा सकता है। जी-जान लगाना इसे ही कहते हैं। यह अपने ढंग की अकेली ऑनलाइन बाल पत्रिका है। पहली बार उत्तम चयन से परिपूर्ण ऐसी सम्पूर्ण पत्रिका ऑनलाइन मोड में दिखी। नंदन का अभाव इस नवागत पत्रिका से पूर्ण हो और यह खीर निरन्तर पके, यही कामना है।

–डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

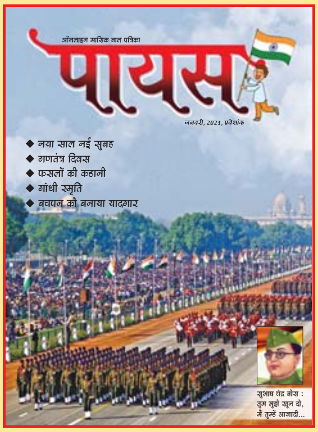

पायस ऑनलाइन बाल पत्रिका, जनवरी 2021 के प्रवेशांक में फोंट शानदार है। रंग संयोजन बाल मन के अनुकूल है। सामग्री-चित्र और स्थान का समन्वय देखते ही बनता है। कहीं भी सामग्री ठूंसी हुई प्रतीत नहीं होती। हां, भरसक प्रयास यह किया जाना चाहिए कि कोई भी सामग्री दो पेज से अधिक न हो। चूंकि पत्रिका ऑनलाइन है, तो पाठक कमोबेश छोटी रचनाएं ही प्राथमिकता के तौर पर पढ़ते हैं।

–मनोहर चमोली 'मनु'

बहुत सुंदर अंक निकला है। हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं

–डा. सुरेन्द्र विक्रम

पत्रिका के अंदर का गेटअप देखकर मन खुशी से झूम उठा। तुसी छा गए हो भाई, छा गए। ईश्वर ने आपको बच्चों के लिए एक श्रेष्ठ पत्रिका निकालने की जिम्मेदारी सौंपी है जिसके प्रवेशांक में आप पूरी तरह से सफल रहे।

–संजीव जायसवाल 'संजय'

मुझे पत्रिका बहुत अच्छी लगी है। आपने बहुत मेहनत की और बहुत बढ़िया पत्रिका तैयार की है। निश्चित तौर पर पढ़ने का आनंद कुछ अलग ही आएगा, क्योंकि सभी रचनाकार बाल साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। आपने विविध सामग्री को चयनित कर इसे संपूर्ण बाल पत्रिका बनाई है।

–डॉ. विमला भंडारी

हम सबके लिए नए वर्ष की नई सुबह को ऐतिहासिक बनाने के लिए हम सब आपका हृदय तल से आभारी हैं। हमारा वादा है कि बालसाहित्य की बगिया में आपके द्वारा लगाए गए इस पौधे को हम अपने सहयोग से सींच-सींचकर पल्लवित, पुष्पित और फलित करते रहेंगे।

–रावेंद्र कुमार रवि

बहुत सुंदर अंक। रंग-बिरंगा यह अंक ज़रूर बच्चों का मन मोह लेगा। बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

–सिराज अहमद

बहुत अच्छा, सुंदर और सफल प्रयास है। नये वर्ष का इससे अच्छा उपहार कुछ नहीं हो सकता। आशा है, जल्द ही नंदन के खालीपन को कुछ हद तक भरा जा सकेगा।

–अरविंद कुमार 'साहू'

आपका यह अंक बेहद आकर्षक और उपयोगी है। मुझे आपकी इस ऑनलाइन पत्रिका की जानकारी एक फेसबुक पोस्ट के माध्यम से मिली। इस जनवरी 2021 प्रवेशांक में मौजूद सभी रचनाएं बालोपयोगी हैं। आपके इस प्रयास की जितनी प्रशंसा करूं, वह कम ही होगी।

–सुभाष चंद्र लखेड़ा

पत्रिका का गेट-अप काफ़ी अच्छा है। पर इतने अच्छे इलस्ट्रेशन वग़ैरह के बावजूद आपने इसकी वर्चुअल प्रति क्यों निकालने की सोची? काफ़ी अंतराल के बाद बच्चों की एक अच्छी पत्रिका देखने को मिली है। चंपक, नंदन, चंदामामा जैसी पत्रिकाओं के बाद जो शून्यता बाल पत्रिकाओं के क्षेत्र में उत्पन्न हो गई थी, संभावना है कि 'पायस' उस को भर सके

–सतीश चित्रवंशी

सरस्वती वंदना

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ नव जलद-मन्द्र रव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

वर दे, वीणावादिनि वर द!

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

इस सरस्वती वंदना को यहां सुनें : https://www.youtube.com/watch?v=qKcnALz5y6Y

फूलों में रंग

जानते हो, फूल प्रकृति द्वारा हमें मिले सबसे खूबसूरत उपहारों में से एक है। रंग-बिरंगे फूल किसी को भी आकर्षित कर सकते हैं। फूलों से जुड़ी कई बातें ऐसी हैं जो हर बच्चे के मन में घुमड़ती है। उनमें से एक यह है कि फूलों में रंग कहां से आते हैं?

फूलों को उनके रंग कैसे मिलते हैं? गुलाब लाल और वायलेट नीला क्यों होता है? अक्सर तुमने लोगों को फूलों की तारीफ करते हुए सुना होगा। लेकिन शायद ही तुम में से किसी को फूलों से जुड़े रहस्यों के और विज्ञान के बारे में पता होगा। प्रकृति के सबसे खूबसूरत संरचना में से एक है फूल, जो रंगों से भरे होते हैं। जिस तरह हम इनसानों का रंग होता है, ठीक उसी तरह से फूलों के रंग भी होते हैं। फूलों में गुलाब में लाल और मैरीगोल्ड में पीला पिगमेंट में पाया जाता है।

अपने लेखक को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

कैसे आते हैं फूलों में रंग? ये सवाल कुछ ऐसा है, मानो, बचपन से लेकर बड़े होने तक हमें कहीं ना कहीं कौंधता ही है। यानी हम चाहे जितना भी बड़े क्यों ना हो जाएं, लेकिन ये सवाल ऐसा है जो हमेशा से दिलचस्प रहा है। तुम्हें बता दूं, फूलों में रंग उनके पौधे के वंशानुगत जीनोम से तय होता है। ठीक उसी तरह लाल, गुलाबी, नीले और बैंगनी रंग के फूलों का रंग मुख्य रूप से एंथोसायनिन नामक पिगमेंट से आता है। वहीं कैरोटीनॉयड नाम का तत्व टमाटर और गाजर में पाए जाते हैं। जो कि पीला, लाल और नारंगी रंग देते हैं। वहीं क्लोरोफिल हरे रंग की पत्तियों और पत्ते में दिखता है। इन सभी वैज्ञानिक शब्दों का वास्तव में मतलब है कि लोगों के समान पौधे भी अपने जीन के अनुसार रंगों का भी चयन करते हैं।

फूलों में क्यों होते हैं रंग : सच में पौधे प्रकृति का दिया हुआ सबसे खूबसूरत तोहफा है। पौधों का रंग, चमकीले फूल पक्षियों, मक्खियों और कीड़ों को आकर्षित करते हैं, जिनकी मदद से पौधे प्रजनन कर पाते हैं। इसके अलावा अगर परागण और प्रजनन इस तरह से किया जाता है, तो पौधे के फल मीठे होंगे। एक खिला हुआ फूल और मीठा पराग पक्षियों, मधुमक्खियों और कीड़ों को उसपर बैठने के लिए आकर्षित करेगा। ठीक उसी तरह जब कोई कीड़ा या मधुमक्खी फूल पर बैठकर दूसरे फूल पर बैठते हैं, तो उसके पैरों में वे पराग चिपक जाते हैं। शोध के मुताबिक फूलों में रंग भी इसीलिए होते हैं ताकि वो कीटों को आकर्षित कर सकें।

क्या खुद बना सकते हैं फूलों के रंगः देखा जाए, तो हमारे विज्ञान ने काफी तरक्की कर ली है। ऐसे में अगर तुम्हारे मन में सवाल उठता है कि क्या इन फूलों का रंग बदला जा सकता है, तो इसका जवाब होगा, क्यों नहीं? लेकिन ये थोड़ा कठिन होगा।

रिसर्च की मानें, तो फूल को लाल रंग की जगह चमकीले नीले रंग का बनाया जा सकता है। लेकिन उसके लिए रसायन की जरूरत पड़ती है। पौधों से कुछ जीन्स को निकालकर फूलों के रंग में बदलाव किया जा सकता है। बता दें, अगर फूलों की पंखुड़ी का रंग बदलना चाहते हो, तो एंथोसायनिन के PH लेवल को बदलकर आप ऐसा कर सकते हो। इसके लिए तुम एक प्लेट पर एक लाल गुलाब की पंखुड़ी को चम्मच या स्पैटुला से कुचलो। फिर उसमें सिरका या बेकिंग सोडा मिलाओ और फिर तुम रंग बदलते हुए देखोगे।

फूल कोई भी हो लेकिन उसकी ख़ूबसूरती उसके रंगों से ही बढ़ती है। फूलों के रंग प्राकृतिक तौर पर होते हैं।

बिल्ली का बच्चा

सान्या का घर नदी किनारे था। पास ही था एक सुंदर हरा-भरा पहाड़, जो उसके गांव बेलापुर की सरहद को छूता था।

जैसा सुंदर सा नाम था, वैसा ही सुंदर था बेलापुर। वहां एक-दूसरे से गले मिलते पेड़ ही पेड़ थे, और थे फूल ही फूल। हर पल हंसते-खिलखिलाते, खुशबुएं फैलाते फूल। इसी बेलापुर में रहती थी फूल-सी सुंदर लड़की सान्या, जो बड़ी भोली-भाली और नटखट थी।

सान्या घूमने की शौकीन थी। इतनी छोटी सी उम्र में भी दुनिया की नई-नई चीजें देखने और नई-नई बातें जानने की बड़ी उत्सुकता थी उसे। कभी वह अपनी मम्मी और पापा से जिद करती, कभी देबू भैया और मीनू दीदी से कि चलो, घूमने चलो। और जब वे न चलते, तो खुद ही चल पड़ती-अकेली। उसे डर नहीं लगता था।

मम्मी समझातीं, "बेटी, ऐसे अकेले जाना ठीक नहीं। जैसे ही फुर्सत हुई, मैं तुझे घुमाने ले जाऊंगी।" पापा भी यही कहते। देबू भैया और मीनू दीदी भी यही कहती।

पर सान्या जानती थी, कहेंगे सब, चलेगा कोई नहीं। कोई घंटों-घंटों अपना फोन देखता रहेगा, कोई टीवी। इसलिए जब भी उसका घूमने का मन होता, तो वह बालों में कंघी करती। कस के रिबन बांधती, पैरों में चप्पल पहनती और झट बाहर सड़क पर आ जाती। और फिर जिधर पांव ले जाते, उधर बढ़ती चली जाती।

रास्ते में जो कुछ नजर आता, उसे वह गौर से देखना न भूलती। उसके बारे में खूब सारा सोचती। खूब, और फिर मन-ही-मन उसकी एक कहानी बना लेती।

घर लौटकर आती, तो मम्मी से कहती, "सुनो मम्मी सुनो, कहानी सुनो।"

"कहानी...! तू सुनाएगी कहानी सान्या?" मम्मी हैरान।

पर तब तक तो सान्या की कहानी शुरू हो चुकी होती। कभी वह मम्मी को किसी अनोखे पिल्ले का किस्सा सुनाती, तो कभी किसी चंचल और मुटल्ली बिल्ली का। एक बार तो उसने एक ऐसी मस्त बकरी का किस्सा सुनाया, जो बाग में जंगली बेर खाने पहुंची। काले-काले जंगली बेर इतने अच्छे थे कि जब उसने जी भरकर बेर खा लिए, तो वह मजे में नाचने लगी। इतना नाची, इतना

चित्र : जय खोहवाल

नाची कि...!

साऩ्या की नई-नई कहानियां सुनकर मम्मी हैरान रह जातीं। सोचतीं, 'अरे, इतनी प्यारी-प्यारी कहानियां कहां से आती हैं सान्या के पास?' पर इसका राज तो सिर्फ सान्या ही जानती थी और उसने यह किसी को बताया न था।

ऐसे ही एक दिन की बात, सान्या के मन में आया कि चलो, कहीं घूमने चलते हैं।

शाम का समय था। मौसम बड़ा प्यारा था। ऐसे में भला किसकी घूमने की तबीयत न होती! पर मम्मी पर जैसे इसका कोई असर ही नहीं था। वे रसोई के किसी काम में लगी थीं। देबू भैया अभी थोड़ी देर पहले ही स्कूल के ग्राउंड में क्रिकेट खेलने गए थे और मीनू दीदी हाथ में मोबाइल लिए, अपने सहेली से हंस-हंसकर बातें कर रही थीं। उनकी बातें खत्म होने में ही नहीं आती थीं।

सान्या ने सोचा, 'अरे, किसी को मेरी परवाह ही नहीं। कोई यह भी नहीं सोचता कि ऐसे बढ़िया मौसम में घर में बैठे-बैठे मैं कितनी बोर हो रही हूं। कुछ और नहीं, तो कोई मुझसे दो-चार बातें ही कर ले। पर नहीं, कोई मेरे बारे में नहीं सोचता। कोई नहीं।'

'इससे तो अच्छा है, थोड़ा-सा घूम ही आऊं। तबीयत बहलेगी। आसपास के पेड़-पौधे देखकर भी खुशी होगी।' उसने अपने आपसे कहा और निकल पड़ी, अकेली।

घर के बाहर कदम रखते ही सान्या को खुशी हुई। इसलिए कि मौसम बड़ा प्यारा-प्यारा था। जोर की हवा चल रही थी और आसमान में बादल हिरनों के प्यारे-प्यारे चंचल बच्चों की तरह दौड़ रहे थे और कूद रहे थे।

"वाह, क्या खूब! कितना अच्छा है कि मैं इस सुहाने मौसम में घूमने निकल आई।" सान्या ने अपने आप से कहा और आसपास के पेड़ों-पौधों और फूलों को देखती हुई तेजी से आगे बढ़ने लगी।

सान्या घर से निकलकर अभी थोड़ी दूर ही गई थी कि मिला उसे एक बिल्ली का बच्चा। बड़ा ही प्यारा, नटखट बिल्ली का बच्चा। हलका भूरा रंग, उस पर बड़ी ही सुंदर काली चित्तियां।

बिल्ली के बच्चे ने सान्या से कहा, "सान्या, ओ सान्या, जरा सुनो मेरी बात!...मैं रीनू आंटी के घर जा रहा हूं। तू भी चल न मेरे साथ।"

"रीनू आंटी के घर-भला किसलिए?" सान्या ने पूछा।

"अरे, इतना भी नहीं जानती, बुद्धू? रीनू आंटी मुझे प्यार करती हैं न, इसलिए!" बिल्ली के बच्चे ने गोल-गोल आंखें घुमाते हुए कहा, जैसे सान्या पर तरस खा रहा हो।

सान्या बोली, "ओहो, यह तो मैं भूल ही गई। चलो, ठीक है। रीनू आंटी के घर चलते हैं। वह तो मुझे भी बड़ा प्यार करती हैं।"

अपने लेखक को जानिए

प्रकाश मनु : सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक। लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें। बाल कविता का इतिहास भी लिखा। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

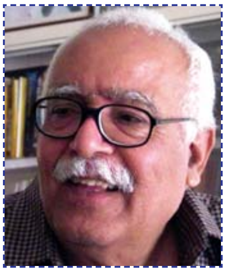

और चलते-चलते थोड़ी ही देर में वे रीनू आंटी के घर जा पहुंचे। रीनू आंटी ने बिल्ली के बच्चे के साथ सान्या को देखा तो खुश हुईं, बहुत खुश।

बातें, खूब बातें कीं उन्होंने बिल्ली के बच्चे से, और सान्या से भी। फिर सान्या से पूछा, "अच्छा सान्या, सच-सच बताओ कि तुम क्या खाओगी? कौन सी चीज तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद है?"

"रसगुल्ले...!" एकाएक सान्या के मुंह से निकला। फिर उसने थोड़ा सुधार करते हुए कहा, "स्पंजी रसगुल्ले!"

रीनू आंटी ने झट सान्या के लिए स्पंजी रसगुल्ले मंगवा लिए। फिर बड़े प्यार से उसे खिलाए।

सान्या को यह देखकर खुशी हुई कि रीनू आंटी ने उस बिल्ली के बच्चे को भी एक-दो नहीं, पूरे चार रसगुल्ले खाने को दिए।

इस पर बिल्ली का बच्चा इतना खुश हुआ कि उछलने-कूदने और कलामुंडियां खाने लगा। उसकी

आंखें मारे खुशी के बिजली के लट्टू जैसी जल रही थीं। देखकर सान्या खूब हंसी, खूब हंसी। फिर बिल्ली का बच्चा बोला, "देखो, मैं नाच दिखाता हूं।"

"ओहो, देखूं तो भला, कैसा नाचते हो तुम!" सान्या मुसकराई।

और सचमुच ऐसा बढ़िया लयभरा नाच दिखाया उसने, जो सिर्फ एक बिल्ली का बच्चा ही दिखा सकता था। वह मजे में झूम-झूम और घूम-घूमकर नाच रहा था। कभी-कभी आगे की दोनों टांगें उठाकर वह लचकने लगता। अगले ही पल फिर दुम हिलाता हुआ अपनी नई अदा दिखाता।

रीनू आंटी के घर पड़ोस की लड़कियां पढ़ने आती हैं। उन्होंने दरवाजे से ही उजककर देखा, अंदर क्या तमाशा हो रहा है?

और जो कुछ उन्होंने देखा, उससे वे हंसते-हंसते लोटपोट हो गईं।

उन्होंने भी शायद किसी बिल्ली के बच्चे को नाचते हुए पहली बार देखा था। और वह नाच भी तो इस अदा से रहा था कि वाह-वाह, क्या कहने!

उस दिन सान्या लौटी, तो अकेले में ही बड़े जोरों से हंस रही थी। जितना-जितना वह अपनी हंसी रोकने की कोशिश करती, उतनी ही वह बढ़ती जाती। यह तो अच्छा था कि बादलों की वजह से कुछ-कुछ अंधेरा हो गया था, इसलिए लोगों ने उसकी हंसी पर ध्यान नहीं दिया, वरना तो...?

पर घर आते ही सान्या मम्मी से जा लिपटी और हंसते-हंसते बोली, "मम्मी-मम्मी, बिल्ली का बच्चा!"

"हां-हां, क्या हुआ बिल्ली के बच्चे को?" मम्मी ने पूछा।

और बताते-बताते सान्या इतना हंसी, इतना हंसी कि यह छोटा-सा किस्सा सुनाने में उसे कोई आधा घंटा लग गया। पर जब बिल्ली के नाचने का पूरा किस्सा मम्मी और मीनू दीदी ने सुना, तो हंसते-हंसते उनका भी बुरा हाल था।

मीनू दीदी हंसते-हंसते बोलीं, "तू रोज अकेले घूमने जाती है, तो ऐसे-ऐसे मजेदार किस्से ढूंढ़कर लाती है कि हंसते-हंसते पेट में दर्द हो जाए। कल से मैं भी तेरे साथ चलूंगी। हम खूब किस्से इकट्ठे करेंगे, और फिर उनकी एक किताब बनाएंगे।"

"हां मीनू दीदी, हां!...फिर आप उस पर चित्रकारी कर देंगी, तो सच्ची, कितना मजा आएगा।"

"ठीक है, मेरी प्यारी बेटी! कल से तुम दोनों बहनें मिलकर घूमने जाना।" कहकर मम्मी ने प्यार से सान्या के गाल थपथपा दिए।

और सान्या सोच रही थी कि कल वह मीनू दीदी के साथ भीखू बाबा की बगिया में जाएगी। वहां फूल ही फूल हैं, और बहुत सारे झूले भी। फिर तो वहां कितना अच्छा लगेगा। ✪

कविता

अब दादी भी

अब दादी भी मोबाइल पर
बातें करती है।

हालचाल पूछे बेटों से
दिन में दफ्तर का,
समाचार बतलाया करती
हो जो भी घर का,
पहले से भी ज्यादा दादी
खुश-खुश रहती है।

पोते और पोतियों से मिल
चैट करे थोड़ी,
दौड़ाती हैं फ्रेंडशिप की
खूब तेज़ घोड़ी,
फेसबुक और व्हाट्स एप की
बाँहें गहती है।

पड़ोसियों के पास बैठकर
गप्प नहीं मारे,
नहीं चुगलियों की काया को
अब तो पुचकारे,
मिला क़दम से क़दम समय के
संग-संग चलती है।

घमंडीलाल अग्रवाल

अपने लेखक को जानिए

घमंडीलाल अग्रवाल : सेवानिवृत्त अध्यापक। 1970 से लेखन। पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रसारण। पाठ्यक्रम में बाल रचनाएं शामिल। 108 पुस्तकें प्रकाशित। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

तितली की सैर

सुबह-सुबह मिनी तितली सोकर उठी। उसने खिड़की से बाहर देखा। नीले आसमान में उगता हुआ सूरज बहुत सुंदर लग रहा था। पक्षियों के चहचहाने की आवाजें आ रही थीं। तभी मम्मी ने आकर कहा, "उठो मिनी, तैयार हो जाओ। आज हम दोनों सैर करने चलेंगे।"

मिनी तितली जो पिछले दिन ही प्यूपा की स्टेज से एडल्ट बनी थी, सैर का नाम सुनते ही सिहर उठी और अपने पंखों को सिकोड़ते हुए बोली, "मम्मी, मैं सैर करने नहीं जाऊंगी। बाहर बहुत सर्दी है।"

"अरे, सर्दी अब कहां है? अब तो बसंत ऋतु आ गई है।"

मिनी पहली बार यह नाम सुन रही थी। उसने उत्सुकता से पूछा, "बसंत ऋतु क्या होती है मम्मी?"

मम्मी बताने लगीं, "हमारे देश में छः ऋतुएं होती हैं। इन्हीं में से एक है बसंत ऋतु, जो फरवरी से शुरु होकर मार्च तक रहती है। इसमें वातावरण बहुत खूबसूरत हो जाता है। इस ऋतु में सर्दी कम हो जाती है और मौसम संतुलित हो जाता है।"

मिनी झटपट बिस्तर से उठ बैठी। उसने अपने खूबसूरत पंख फैलाए और उड़ चली सैर का आनंद लेने। रास्ते में मिनी को चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही थी। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें खेत दिखाई दिए। मिनी आश्चर्य से चहकी, "मम्मी देखो, खेतों पर पीले रंग का गलीचा बिछा हुआ है।"

"यह गलीचा नहीं, सरसों के फूल हैं। इनके बीजों से तेल निकाला जाता है, जो बहुत फायदेमंद होता है। इसके हरे पत्तों की सब्जी बनाई जाती है। इससे और भी अनेक लाभ है।"

उड़ते-उड़ते वे दोनों एक सुंदर बगीचे में जा पहुंचीं। वहां का खूबसूरत दृश्य देख, मिनी की खुशी की सीमा न रही। चारों ओर तरह-तरह के फूल खिले थे। सूरजमुखी, गुलाब, डहेलिया, चंपा, चमेली, गुड़हल और गेंदा, जिन पर उनकी साथी तितलियां मंडरा रही थीं। बगीचे के बीचोबीच एक तालाब में कमल के फूल खिले हुए थे।

खुशी से चहकते हुए मिनी गुलाब की ओर बढ़ी, तभी सूरजमुखी ने उसे पुकारा, "अरे, उधर कहां जा रही हो मिनी? मेरे पास आओ, मेरे पास आओ। यह सिर्फ पीले रंग का है, जबकि मैं लाल, पीला, सफेद, काला, गुलाबी, नारंगी, जामुनी आदि बहुत से रंगों का होता हूं।"

गुलाब की बात सुनकर सूरजमुखी कोई जबाब सोच ही रहा था कि डहेलिया बीच में कूद पड़ा, "अकेले तुम्हारे पास ही रंगों का खजाना नहीं है। मेरे पास भी बहुत से रंग हैं। मैं आकार में बड़ा भी हूं, मेरी खूबसूरती का जबाब नहीं है।"

गुलाब हंसकर बोला, "तुम्हारे पास खूबसूरती है, किंतु खुशबू नहीं

है, जबकि मेरे पास खूबसूरती और खुशबू दोनों हैं।”

“तुम्हारी टहनी में कितने कांटें होते हैं।” सूरजमुखी को आखिर जवाब सूझ ही गया।

गुलाब बोला, “मेरे पास इतनी खूबसूरती है कि मेरी यह कमी दब जाती है। तभी तो मुझे फूलों का राजा कहा जाता है।”

तभी तालाब से कमल के फूल ने आवाज लगाई। कमल की आवाज पर सभी फूल हंस पड़े, “तुम्हारे पास मिनी तितली भला क्यों आएगी? तुम तो कीचड़ और तालाबों में खिलते हो। रंग भी दो ही हैं। गुलाबी और सफेद।”

कमल के फूल ने पूरे विश्वास के साथ अपने साथियों की बात का जबाब दिया, “खिलने की जगह कोई भी हो, गुणों का महत्व होता है। मुझे भारत के राष्ट्रीय पुष्प का दर्जा यूं ही नहीं दिया गया है। सुंदर होने के साथ-साथ मैं बेहद सुगंधित भी हूं। मेरी पत्तियां गोल होती हैं। दक्षिण भारत में ये प्लेट्स के रुप में प्रयोग की जाती हैं।

तभी गेंदे ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, “दोस्तो, मेरी तरफ देखो, मैं पीले-नारंगी रंग का होते हुए भी कितना सुंदर हूं और जल्दी मुरझाता भी नहीं हूं, तभी तो मुझसे बनी मालाएं, उत्सव में प्रयोग की जाती हैं।”

इसी तरह गुड़हल ने भी अपनी सुंदरता का बखान किया। मिनी तितली उन सबकी आपसी बहस सुनकर परेशान हो गई।

उसी समय वहां स्कूल के कुछ बच्चे आए। उनके साथ उनकी टीचर भी थी। बच्चे चारों ओर देखते हुए बोले, “कितना सुंदर बगीचा है।”

मैम बोलीं, “हां, यह शहर का सबसे सुंदर बगीचा है. इसकी विशेषता यह है कि यहां तरह-तरह के फूल एक साथ खिले हुए हैं। प्रकृति ने हर फूल को अलग-अलग विशेषताएं दी हैं। जानते हो, इन फूलों में औषधिय गुण भी हैं। जैसे गुलाब की पत्तियों से गुलाब जल बनता है, जो आंखों को ठंडक पहुंचाता है। सूरजमुखी का तेल और बीज में विटामिन होते हैं। गेंदे के फूल की पत्तियों में एंटीएजिंग गुण होते हैं। इसका रस इंफेक्शन दूर करता है। इसका उपयोग टेक्सटाइल उद्योग में किया जाता है। डहेलिये के फूल का उपयोग माइग्रेन, पेट दर्द आदि बीमारियों में किया जाता है। इसी तरह हर फूल लाभकारी है।”

टीचर की ये बातें सुनकर सभी फूल शर्मिंदा थे। सचमुच उन सबके साथ होने से ही तो बगीचे की सुंदरता बढ़ी है। अब गुलाब मिनी तितली से बोला, “तुम दोनों बारी-बारी हम सबका नैक्टर चूसा। तुम्हारे पैरों में हमारे परागकण चिपक जाएंगे जिससे हमारा परागण होगा।”

मिनी और मम्मी तितली फूलों पर मंडराने लगे। शाम को घर जाते हुए दोनों बहुत खुश थे।

अपने लेखक को जानिए

रेनू मंडल : हाउसवाइफ। पिछले 40 वर्षों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 800 कहानियां प्रकाशित। बड़ों के साथ साथ बच्चों की कहानियां भी देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। एक कहानी संग्रह भी आ चुका है।

मुंबई का सबसे खास नया लैंडमार्क

तुकाराम ओम्बले मेमोरियल

आप अगली बार मुंबई जाएं तो एएसआई तुकाराम ओम्बले की धड़ प्रतिमा को देखना ना भूलें। यह गिरेगांव चौपाटी पर स्थापित है। तुकाराम ओम्बले जैसे बहादुर और बेखौफ पुलिसकर्मी पर सारा देश गर्व करता है। उन्होंने 26/11 आतंकी हमले के मुख्य दरिंदे अजमल कसाब को पकड़ा था। तुकाराम की प्रतिमा गेटवे ऑफ इंडिया परिसर या किसी अन्य पार्क में लगती, तो बेहतर होता। तब उन्हें उनकी प्रतिमा के पास जाकर कोई भी श्रद्धांजलि देने की स्थिति में होता। उनकी प्रतिमा सड़क के साथ लगी है। जिस सड़क पर लगातार तेज और भारी ट्रैफिक चलता है, वहां पर रुकना वैसे भी आसान नहीं है।

तुकाराम ओम्बले की धड़ प्रतिमा को देखकर एक बात और भी जेहन आती है कि क्या उनकी आदमकद प्रतिमा नहीं लग सकती थी? तुकाराम ओम्बले तथा उनके साथियों ने जिस तरह के शौर्य का परिचय दिया था उसकी दूसरी मिसाल मिलना कठिन है।

इसमें कतई कोई शक नहीं है कि भारत 2008 में समुद्र के रास्ते पाकिस्तान से आए 10 आतंकवादियों द्वारा मुंबई में खूनी खेल को कभी नहीं भूल सकता। उस भयानक हमले में अनेक निर्दोष मारे गए थे। पाकिस्तान से आए आतंकवादियों में सबसे

खूंखार आतंकवादी अजमल कसाब था, जिसने खूब खून-खराबा किया था कसाब उस आतंकी हमले में अकेला ऐसा पाकिस्तानी आतंकी था जिसे जिंदा पकड़ा था तुकाराम ओम्बले ने सिर्फ एक लाठी के सहारे।

दरअसल हुआ यह था कि पुलिस और आतंकियों में गोलीबारी हो रही थी। पुलिस फायरिंग में एक आतंकी मारा गया और कसाब नाटक करने लगा, मानो वह मर गया हो। उस समय तुकाराम ओम्बले के पास सिर्फ एक लाठी थी और कसाब के पास एक एके-47 राइफल थी। ओंबले ने कसाब की राइफल की बैरल पकड़ ली थी। उसी समय कसाब ने ट्रिगर दबा दिया और गोलियां तुकाराम ओम्बले के पेट और आंत में लगीं। तुकाराम वहीं गिर गए लेकिन अपनी अंतिम सांस तक बैरल को थामे रखा ताकि कसाब और गोलियां न चला पाए।

जरा सोचिए कि अगर कसाब भी मारा जाता, तो पूरी दुनिया को पाकिस्तान समझा देता कि उसका इन हमलों से कोई लेना-देना ही नहीं था।

तुकाराम ओम्बले की बहादुरी को देखते हुए भारत सरकार की ओर से उन्हें मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था।

अब मुंबई में कामकाज या सैर-सपाटा करने के लिए जाने वालों को तुकाराम ओम्बले की प्रतिमा के पास जाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए। जो लोग मुंबई में सिर्फ कुछ फिल्मी सितारों के घरों को बाहर से देखकर अपने को खुशनसीब महसूस करते हैं, उन्हें अपनी सोच बदलनी चाहिए। फिल्मी सितारे समाज के नायक नहीं हैं।

फिलहाल तो तुकाराम ओम्बले की प्रतिमा के पास कम ही लोग पहुंचते हैं। अभी तक मुंबई हमलों की बरसी पर आतंकवादियों के हमले का शिकार बने लोगों को उनके रिश्तेदारों, सरकारी अधिकारियों, नेताओं, खेल जगत के लोगों और कुछ आम लोग श्रद्धांजलि देते हैं।

तुकाराम ओम्बले की प्रतिमा पर भी पुष्प अर्पित कर दिए जाते हैं और मोमबत्तियां जला दी जाती हैं। इसी जगह पर उन्होंने अजमल कसाब को पकड़ते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया था।

हम यहां पर प्रतिमाओं की कायदे से देखरेख नहीं करते हैं। कुछ समय पहले पंजाब के शहर लुधियाना के मुख्य चौराहे पर 1971 की जंग के नायक शहीद फलाइंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेंखो की आदमकद मूर्ति के नीचे लगी पट्टिका को उखाड़ दिया गया था। मोदीनगर (उत्तर प्रदेश) में 1965 युद्ध के नायक शहीद मेजर आशा राम त्यागी की मूर्ति बेहद बुरी हालत में है। बाकी की बात तो छोड़िए, राजधानी दिल्ली में ग्यारह मूर्ति से बापू चश्मा का गायब है। ये सब शर्मनाक है। अगर हम किसी महा पुरुष की प्रतिमा लगाएं तो उसकी उचित देखरेख भी करें।

अंत फिर से बात शहीद तुकाराम जी की। उनकी जिधर प्रतिमा लगी है, वह अपने आप में पवित्र स्थान है। उसे आप मुंबई का सबसे खास नया लैंजमार्क भी मान सकते हैं। ✪

अपने लेखक को जानिए

विवेक शुक्ला : लगभग 35 वर्षों से मीडिया में सक्रिय। चोटी के मीडिया संस्थानों में वरिष्ठ पदों पर रहे। गांधीजी, दिल्ली, आर्किटेक्चर, प्रवासी भारती, खेल आदि पर लगातार हिन्दी और अंग्रेजी में लेखन। अब तक देश-विदेश के प्रमुख प्रकाशनों में दस हजार से अधिक लेख, इंटरव्यू, यात्रा वृत्तांत आदि प्रकाशित।

तुकाराम ओम्बले की पत्नी राष्ट्रपति से मरणोपरांत अशोक चक्र प्राप्त करती हुईं

परिचय

नाम : तुकाराम ओम्बले
जन्म : 1954, महाराष्ट्र
मृत्यु : 27 नवंबर, 2008, मुंबई
डिपार्टमेंट : मुंबई पुलिस
(1991 से 2008)
पद : एसिस्टेंट सब इंसपेक्टर
सम्मान : मरणोपरांत अशोक चक्र

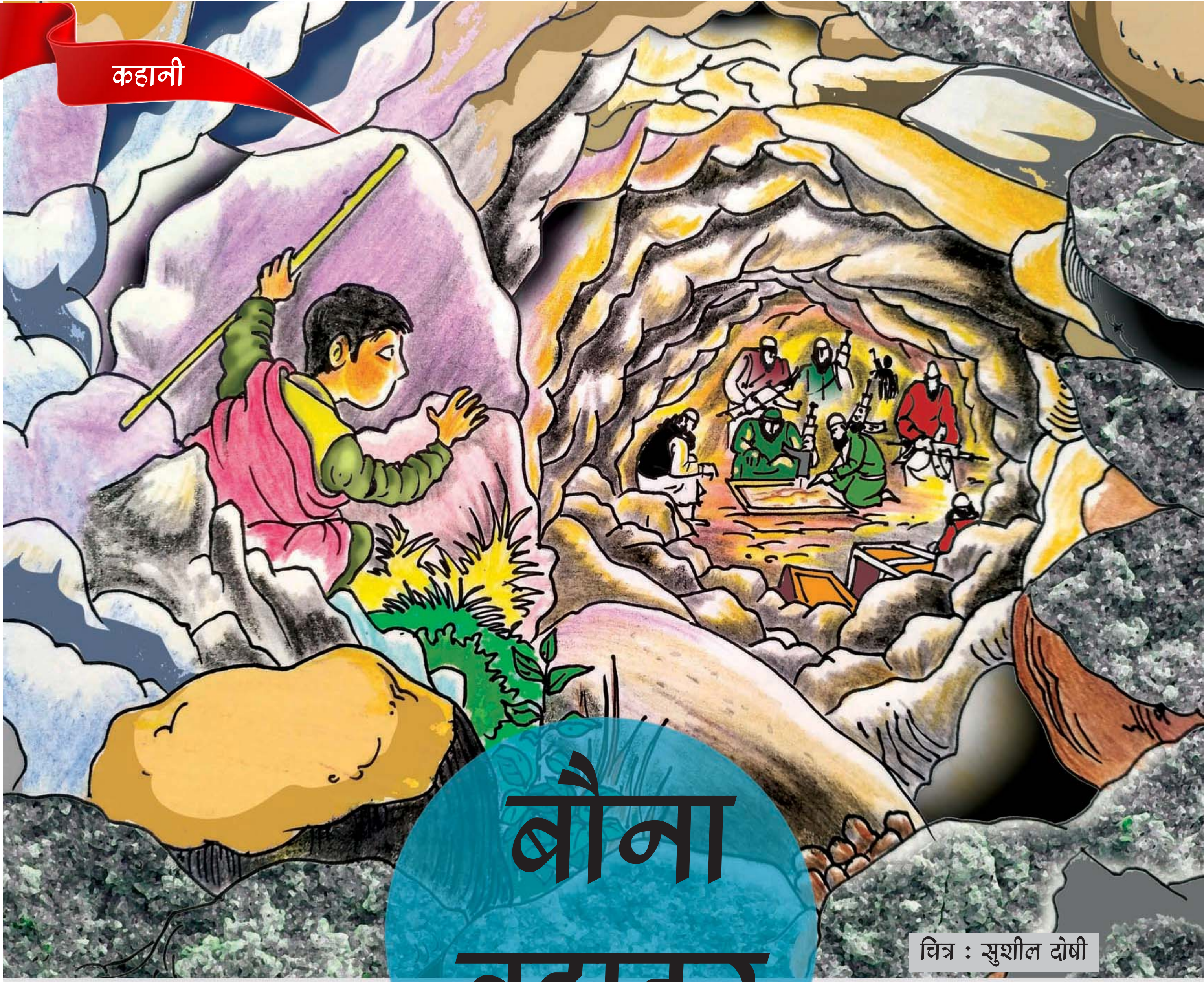

चित्र : सुशील दोषी

बौना बहादुर

देश की सीमा के पास हिमालय की गोद में एक छोटा-सा गांव था। उस गांव का नाम था बहादुरपुर। गांव की बसावट बहुत ही सुंदर थी। गांव जितना सुंदर था, उतने ही सुंदर वहां के लोग सुंदर थे। इतना ही नहीं बहादुरपुर गांव के लोग बहादुर भी थे। उस गांव में कोई घर ऐसा नहीं था, जिसका बेटा या पोता फौज में नहीं हो। सरहद से सटे होने के कारण देशभक्ति उनमें कूट-कूट के भरी हुई थी।

बहादुरपुर गांव में एक घर ऐसा था, जिसमें कोई फौजी जवान नहीं था। वह था मंगलू का घर। मंगलू बारह साल का था। उसके परिवार में सदस्यों का कद बहुत छोटा था। लम्बाई न होने के कारण वे फौज में भर्ती नहीं हो पाते थे। मंगलू को इस बात का बहुत दुख था कि उसका परिवार देशसेवा में काम नहीं आ सकता था। वह प्रतिदिन पहाड़ों पर सारे गांव की भेड़-बकरियां चराने जाया करता था। गांव के बच्चे उसे बौना मंगलू कहकर चिढ़ाते थे।

एक बार कुछ आतंकी सीमा पार करके बहादुरपुर के जंगलों में छुप गए थे। जब यह सूचना सुरक्षाबलों को मिली, तो उन्होंने वहां खोजबीन शुरू कर दी। काफी ढूंढ़ने के बाद भी उनका कोई सुराग नहीं मिला। आतंकियों की खबर सुनकर बहादुरपुर के लोग दहशत में थे। उन्हें डर था कि आतंकवादी उनके गांव या देश के किसी हिस्से में हमला करके नुकसान न पहुंचा दें ।

एक दिन मंगलू अपनी भेड़-बकरियों को एक ऊंची चोटी पर चरा रहा था। बादलों के दल भी उस चोटी पर उतरे हुए थे। इस कारण कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था। सब कुछ दूर से धुंधला-धुंधला सा था। मंगलू एक गुफा के बाहर बैठा खेल रहा था। एकाएक उसे उस गुफा के अंदर

से कुछ खुसुर-फुसुर सुनाई दी।

मंगलू ने सोचा,'इतनी ऊंचाई और ठंडे इलाके में इस रहस्यमयी गुफा में कौन हो सकता है।' वह उस खुसुर-फुसुर का रहस्य जानने के लिए गुफा में चला गया। छोटे कद का होने के कारण उसे अंदर जाने में कोई परेशानी नहीं हुई।

गुफा के अंदर जाने के बाद उसके हाथ-पैर फूल गए। जो उसने दृश्य देखा, इससे पहले उसने केवल सुना था, देखा नहीं था। दस-पंद्रह लोग हथियारों के साथ बैठे कोई योजना बना रहे थे। उनके हाथों में छोटी-छोटी टॉर्च थीं। एक बड़े से कागज को फैलाकर एक आदमी उनको कुछ समझा रहा था। मंगलू समझ गया कि ये वही आतंकी हैं, जिन्हें पकड़ने के लिए सेना ने सर्च आपरेशन चला रखा है। वह छोटे-छोटे कदमों से जैसे-तैसे गुफा से बाहर आ गया। फिर वह छोटी-बड़ी पहाड़ियों को पार करता हुआ, सुरक्षाबल के कैंप में पहुंच गया। उसने वहां हांफते हुए सुरक्षा अधिकारियों को सारी बात बता दी।

सुरक्षाबलों ने मंगलू को साथ लिया और अपनी एक टुकड़ी लेकर उस गुफा के पास पहुंच गए। अपनी योजना के अनुसार उन्होंने आतंकवादियों पर हमला कर दिया। अचानक हुए हमले से आंतकवादी घबरा गए। वे कुछ सोच पाते, इससे पहले उन सभी को सुरक्षाबलों ने ढेर कर दिया। उनके पास से काफी गोला-बारूद और हथियार मिले। उनके पास देश के बड़े-बड़े शहरों के नक्शे थे। वे देश को भारी नुकसान पहुंचाना चाहते थे।

सुरक्षाबलों को एक बड़ी कामयाबी मिलने से देश को बचाया जा सका। सुरक्षाबल के कमांडर ने मंगलू की बहादुरी की सराहना की। उन्होंने अपने ऑपरेशन की सफलता का श्रेय मंगलू की सूझबूझ व साहस को दिया। बहादुरपुर गांव में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में मंगलू की हिम्मत के चर्चे थे। उसके गांव के लोग भी मंगलू की बहादुरी के दीवाने हो गए।

गांव के बच्चे उसे बौना मंगलू कहने की बजाय बहादुर मंगलू कहने लगे थे। इस घटना के बाद प्रशासन ने मंगलू का नाम वीरता पुरस्कार के लिए सरकार को भेज दिया गया।

मंगलू अब समझ गया कि कद से कुछ नहीं होता, होता तो सिर्फ साहस और हिम्मत से है। उसे देश के काम आने पर अपने छोटे कदपर गर्व था। ✪

अपने लेखक को जानिए

गोविन्द भारद्वाज : बाल साहित्य रचनाकार और प्रधानाचार्य। आठ पुस्तकें प्रकाशित (छह कहानी संग्रह और दो बाल कविता संग्रह)। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा पुरस्कृत। तीस से अधिक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त। देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर रचनाओं का प्रकाशन।
आकाशवाणी व दूरदर्शन पर कार्यक्रमों का प्रसारण।

मेघालय में मेघों से मुलाकात

पूर्वोत्तर के आठ राज्य असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैंड, सिक्किम व मणिपुर 'ऐट सिस्टर्स' कहलाते हैं। इनमें से मेघालय की राजधानी शिलांग में जाने का मुझे मौका मिला। यह प्रदेश हरियाली, प्रकाश और जल स्त्रोतों से भरा-पूरा है। इसे पूर्वोत्तर का स्काटलैंड ही नहीं, उगते सूर्य और मेघों का घर भी कहते हैं।

शिलांग में सबसे पहले मतिलांग पार्क में अद्भुत एलीफेंट फाल्स देखे। दूधिया जलप्रपातों का ऊंचाई से गिरना और गिरते पानी में जब सूर्य की किरणें पड़ती, तो इंद्रधनुष का दिखाई देना सम्मोहन पैदा कर रहा था। सभी की इच्छा झरनों के नजदीक जाकर भीग जाने की थी। अंग्रेजों ने इसका नाम 'एलीफेंट फॉल' रखा, क्योंकि इसकी बाईं ओर की एक चट्टान हाथी जैसी दिखती थी, परंतु 1897 में यह भूकंप से तबाह हो गई।

शिलांग की गारो, खासी, जयंतिया पहाड़ियां और इन में बसने वाली जनजातियों के लोगों को यहां की सुंदर पोशाक में देखना संभव हुआ। यहां के बाजारों में दुकानों पर औरतें बैठी थीं। यहां बेटियों से वंश चलता है और बेटियां ही पैतृक संपत्ति की वारिस होती हैं। विवाह के पश्चात लड़का ससुराल जाता है और घर व घरवालों की देखभाल करता है। औरतें बाहर काम करने जाती हैं।

मेघालय अर्थात मेघ+आलय। मतलब मेघों का घर, शुरू से ही मैं सोचती थी कि क्या मेघों का भी सचमुच कोई घर होता है? शिलांग से करीब 60 किलोमीटर की दूरी पर विश्व प्रसिद्ध चेरापूंजी स्थित है, जो अत्याधिक

बारिश के लिए जाना जाता है। यहां जाकर इस सच को जानने का मौका मिला कि हां, सचमुच मेघों का भी घर होता है। इसके रास्ते में ऊंची-नीची पहाड़ियां, बादलों से ढके आकाश, पहाड़ियों से होड़ लगाते देवदार, चीड़, एरोकेरिया जैसे वृक्ष तथा नाशपाती, अनानास, खजूर जैसे फलों के हरे-भरे वृक्ष थे। जगह-जगह पहाड़ों से झरनों के रूप में गिरता पानी नयनाभिराम दृश्य उत्पन्न कर रहा था। चेरापूंजी पहुंचने पर चारों तरफ जहां भी निगाह जाती, प्राकृतिक मन मोहने वाले दृश्यों में उलझकर रह जाती।

फिर जो चेरापूंजी से मौसमाई गुफा तक के सफर ने ऐसा जादुई एहसास दिलाया कि मेरा रोम-रोम कुदरत का ऋणी हो गया। एक तरफ ऊंचे हरे-भरे पहाड़ तो दूसरी तरफ गहरी घाटी से ऊपर मुंह उठाकर चले आ रहे बादल। सचमुच यह तो बादलों का स्थार्यी घर है। और अपने घर में मुक्त विचरण करते बादल निरंतर गतिमान कभी घाटियों के ऊपर, हरे-भरे जंगलों के बीच, पहाड़ियों के बीच मृगछौंनो से कुलांचे भरने में लगे थे। कभी बादल हौले से मुझे छू कर निकल जाते, तो कभी नटखट बच्चे की तरह बगल में गुदगुदी कर ठंडा, सीला अहसास दिलाते। कभी पलक झपकते ही मुझे भिगो जाते, मानो मेरे साथ होली खेल रहे हों।

मौसमाई गुफा में अंधेरा था और मन में शंका थी कि न जाने आगे क्या हो? कितनी लंबी है यह गुफा? किसी को कोई जानकारी नहीं थी। गुफा में ऊपर से ठंडा पानी टपक रहा था और नीचे ठंडा बर्फ का पानी। गुफा के अंदर ऊंची-नीची, तिरछी-नुकीली, आड़ी-तिरछी चट्टानों के बीच यह तंग रास्ता था।

कई बार ऐसा लगा, जैसे मैं बादलों के बीच से गुजर कर रही हूं। मुंह से वाह! अद्भुत निकला। पहाड़ी पर ऊपर पहुंचकर नीचे झांका, तो ऐसा लगा, जैसे आसमान और मंडराते बादल कितनी नीचे रह गए हैं। तब इस गाने की पंक्तियां बरबस मुंह से निकली, 'आज मैं ऊपर, आसमां है नीचे..!' चारों तरफ बादलों की अथक दौड़ दिखाई पड़ रही थी। मन में उत्सुकता पैदा हुई, आखिर ये कहां और क्यों दौड़ रहे हैं? ऐसा लग रहा था जैसे कोई दौड़ की प्रतियोगिता हो। हरे-भरे वृक्षों और पहाड़ की पृष्ठभूमि में ये बादल अद्भुत दृश्यावलियां प्रस्तुत कर रहे थे। मानो एक कुशल चित्रकार की तरह बादल एक से बढ़कर एक बढ़िया पेंटिंग बना रहे हों। सच

अपने लेखक को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक-1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बालकविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

पूछो, तो यहां के मौसम और बादलों के अभिनय ने ऐसा मन मोहा कि खुमारी-सी चढ़ गई। उधर बस हॉर्न पर हॉर्न बजा रही थी। सभी मेरा इंतजार कर रहे थे, पर मेरा यहां से जाने का मन नहीं कर रहा था। बादलों के अदृश्य-दृश्यचित्रण के मोहक अंदाज ने मुझे अपने मोहपाश में जकड़ रखा था। अब समझ में आया कि कालिदास ने 'मेघदूत' की रचना क्यों और कैसे की होगी? और क्यों इसे मेघों का घर कहते हैं? मेरे मुंह से बरबस ही निकला, "हे मेघ! क्या मैं तुम्हारे घर में स्थायी आवास नहीं बना सकती? पता है मुझे, तुम्हारा उत्तर ना में होगा, तुम डरते हो हमसे। हम तुम्हारा ख्याल नहीं रखते, यहां आकर गाड़ियां चलाएंगे... जंगल काटेंगे... तुम्हारा चैन और सुकून छीन लेंगे। हमारी लालची प्रवृत्ति तुम्हारे कुदरती ठाठ-बाट को तबाह कर देगी। वरना तो कुदरत तुमसे ऑक्सीजन लेकर और तुम्हें कार्बनडाइऑक्साइड देकर सहभागी और मित्रवत रह सकती है।"

पर कुदरत को मानव की बजाय कीट-पतंगे, पक्षी, जीव- जंतु पसंद हैं, क्योंकि वे उनके जीवन में खलल नहीं डालते। घाटी से उठते बादलों को देख कभी-कभी ऐसा आभास होता है जैसे धरा के हृदय की पीड़ा धुआं-धुआं होकर छितर रही है। यहां की आबोहवा और चुंबकीय आकर्षण से बाहर आना मुश्किल हो रहा था।

मैं तो यहां जीतने आई थी, पर खुद को हार चली। सुना है, जो एक बार ब्रह्मपुत्र महानद को पार कर ले, उसे कम से कम 3 बार निश्चित ही यहां आना पड़ता है। मैं फिर यहा फिर इंतजार करूंगी।

स्नैकी का आईडिया
कथा और चित्र : पंकज राय
स्नैकी एक बहुत ही प्यारा सांप था। वह जहरीला नहीं था। इसलिए कोई उससे डरता नहीं था। सांप होने पर भी स्नैकी बहुत डरपोक था
लोलो जानती थी कि स्नैकी डरपोक है और जहरीला भी नहीं है।
स्नैकी, मेरे लिए नाच, नहीं तो मैं तुझे चोंच मारूंगी।
लोलो, प्लीज, मुझे अकेला छोड़ दो। मैं सोना चाहता हूं। तंग मत करो।
स्नैकी की बात सुनकर लोलो को गुस्सा आ गया।
तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, ऐसे कहने की।
अरे, मेरी पूंछ।
भविष्य में मुझसे ऐसे बात मत करना।

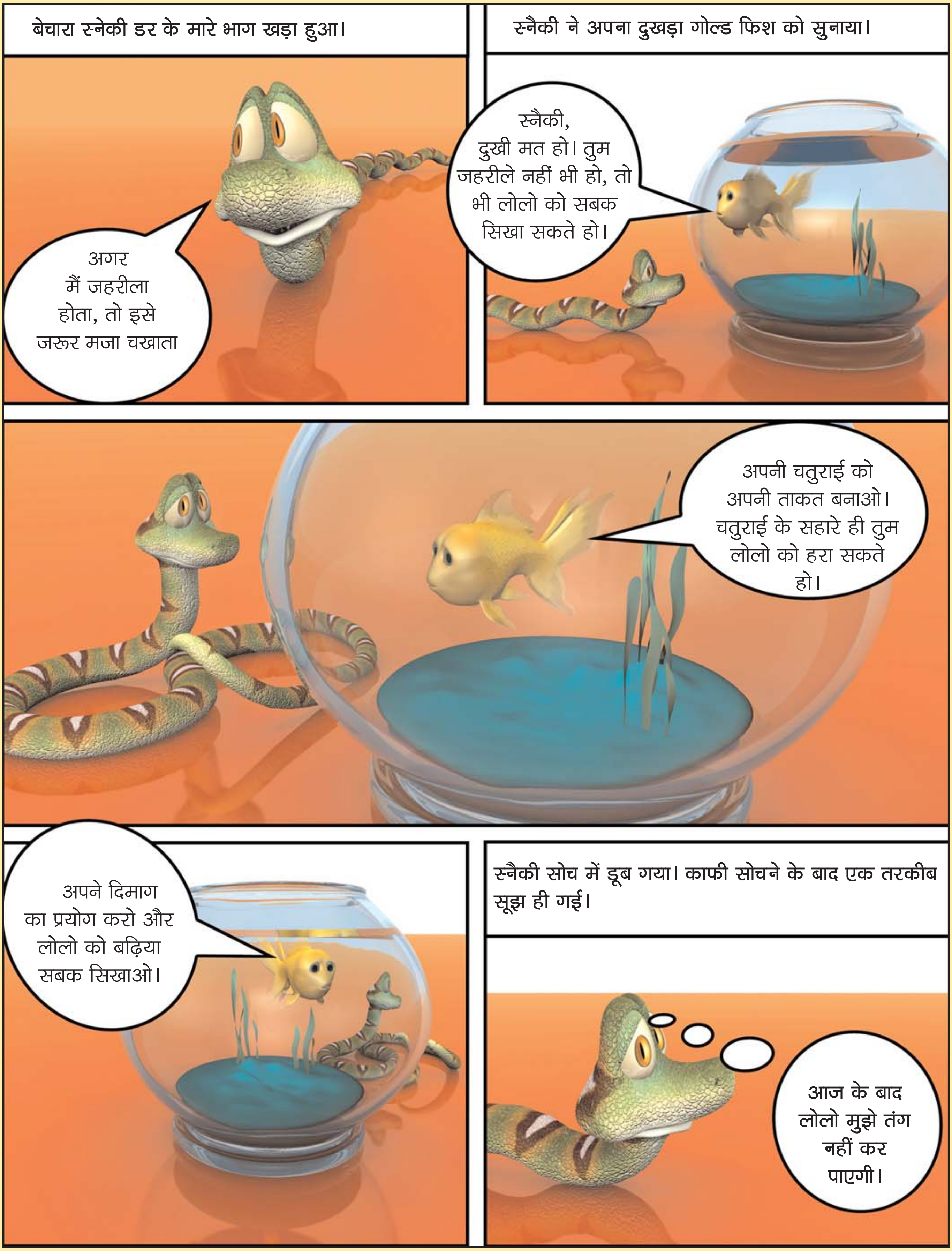
बेचारा स्नेकी डर के मारे भाग खड़ा हुआ।
अगर मैं जहरीला होता, तो इसे जरूर मजा चखाता
स्नैकी ने अपना दुखड़ा गोल्ड फिश को सुनाया।
स्नैकी, दुखी मत हो। तुम जहरीले नहीं भी हो, तो भी लोलो को सबक सिखा सकते हो।
अपनी चतुराई को अपनी ताकत बनाओ। चतुराई के सहारे ही तुम लोलो को हरा सकते हो।
अपने दिमाग का प्रयोग करो और लोलो को बढ़िया सबक सिखाओ।
स्नैकी सोच में डूब गया। काफी सोचने के बाद एक तरकीब सूझ ही गई।
आज के बाद लोलो मुझे तंग नहीं कर पाएगी।

अगले दिन लोलो फिर स्नैकी को तंग करने आई।
मेरे पैर छूकर कल की बदतमीजी के लिए क्षमा मांगो।
तुम पागल हो क्या ? मैं पागलों का पैर नहीं छूता। हा-हा-हा।
यह सुनकर लोलो आगबबूला हो गई। वह स्नैकी को चोंच मारती, उससे पहले ही स्नैकी जल्दी से एक घड़े में घुस गया।
अगर दम है, तो मुझे पकड़कर दिखाओ।
स्नैकी को सबक सिखाने के लिए लोलो उसके पीछे घड़े में घुसी। पर तब तक एक छोटे से छेद से स्नैकी बाहर निकल गया।
ठहरो, मैं तुम्हें सबक सिखाती हूं।
फिर स्नैकी घड़े को सीधा कर उसके मुंह पर कुंडली मारकर बैठ गया। अब लोलो को अपनी गलती पता चली। घड़े में फंसकर वह स्नैकी से माफी मांगकर लगी।
मुझे माफ कर दो। मैं वादा करती हूं, अब तुम्हें कभी तंग नहीं करूंगी।
स्नैकी का उपाय काम आ गया। अपनी उदारता दिखाते हुए उसने लोलो को आजाद कर दिया। उसके बाद स्नैकी आराम से सोने लगा, क्योंकि दोनों अब दोस्त बन गए थे।
ZZZZ
ZZZZZ

प्रकृति के वेंटिलेटर

"जया, अविनाश अस्पताल में ठीक तो है ? मुझे यकीन नहीं हो रहा। जरा सा बुखार ही तो था, सीधे एयरपोर्ट से डॉक्टर उसे अस्पताल कैसे भेज सकते हैं? घर के किसी रिश्तेदार को भी साथ नहीं जाने दिया। चीन ही तो गया था, कोई अपराध थोड़े ही किया था?" नानी के माथे पर चिंता की लकीरें थी।

मम्मी बोलीं, "अम्मां, चीन से फैली कोरोना वायरस की महामारी की वजह से, एहतियात और इलाज के लिए अविनाश को अस्पताल में रखा गया है। वहां उनका इलाज भी हो रहा है।"

"मम्मी! पापा का घर में ही इलाज हो जाता, पहले भी तो ऐसे ही हुआ था।" गौरी बोली ।

"हां बेटा, पर कोरोना वायरस हवा में थूक से फैलता है। घर पर भी सब को यह बीमारी होने का खतरा था। नानी की उम्र तो 60 वर्ष से ज्यादा है, बड़ी उम्र में तो यह बीमारी जानलेवा होती है।" जया ने प्यार से समझाया।

"संतरे, सेब, अनार ले लो! ताज-ताजे फल ले लो।" सड़क से आवाज आई।

"रामू काका, चांद आ गया है। दो किलो संतरे खरीद लीजिए और काका, 6 फीट की दूरी से ही थैला रख दीजिएगा। बाद में अपने हाथ साबुन से 20 सेकंड तक मलकर धो लीजिएगा।"

"अरे, हम तो एक-एक फल देखकर लेते हैं।" काका ने आपत्ति की।

"हां काका, पर दूरी रखने से ही सब इस वायरस के इंफेक्शन से बच पाएंगे। अरे हां, उसे बिस्किट और पानी भी दे दीजिएगा। इस महामारी में जब हम सब घरों में दुबके बैठे हैं, वह घर घर जाकर फल बेच रहा है।"

"सही कहती हो जया। इस कोरोना की मुसीबत में पहली बार फेरीवाले का नाम सुना। कितना प्यारा नाम है, चांद।" नानी ने खिड़की से बाहर झांकते हुए कहा ।

पीछे के प्लॉट पर झोंपड़ी में रह रहा परिवार अब दिन भर वही

चित्र : इंदिरा

नजर आता। आदमी रोज सुबह मजदूरी करने जाता था और पत्नी पास के ढाबे में बर्तन मांजती थी। पर लॉकडाउन के चलते घरों से निकलने की मनाई हो गई थी। दोनों की रोज-रोटी ठप हो गई थी ।

ऑनलाइन आर्डर कर दाल, चावल, तेल और नमक के 30 पैकेट मंगवाए गए। गौरी ने पूछा, "मम्मी, यह किसके लिए है ?"

"बेटा, पीछे के प्लॉट पर अनेक लोग रहते हैं, जो रोज कमाते थे पर अब तो सब काम बंद है। पड़ोस की बिंद्रा आंटी फोन पर बता रही थीं कि उनकी गली में रहने वाले रिक्शा वाले घर में बैठे हैं, खाने को कुछ नहीं है और कमा भी नहीं सकते।"

"हां मम्मी, आज स्मृति बता रही थी कि उसके इलाके में भी अनेक लोग हैं जिन्हें भीख मांगकर भी खाने को नहीं मिल रहा।"

"यह सभी पैकेट उनके लिए हैं। मेरी चौराहे के चेक पोस्ट के पुलिस के सिपाही से बात हुई है। वह ये पैकेट उन मजदूरों और रिक्शा वालों के परिवारों को बंटवा देंगे।"

गौरी ने जाकर अपनी गुल्लक खोली और मम्मी के सामने रख दिए। मम्मी की प्रश्न भरी निगाह का उसने उत्तर दिया, "मम्मी, मैं नई पजल लेने के लिए पैसे बचा रही थी, उसे बाद में ले लूंगी। आप और जरूरतमंद लोगों को खाना दे दें और अपनी सड़क पर रह रहे कुत्तों को बिस्कुट। ढाबा बंद होने से वह भी भूखे हैं।"

नानी की आंखें ख़ुशी से नम हो गईं, "शाबाश गौरी, समाज के लिए कुछ करने के लिए बड़ा होना जरूरी नहीं है।"

मम्मी ने गौरी का माथा चूमा और उसे लिपटा लिया, "देखो, लीडर बनने या समाज में योगदान करने की कोई उम्र नहीं होती। स्वीडन की छोटी सी लड़की ग्रेटा थनबर्ग ने पृथ्वी को बचाने के लिए कितनी बड़ी मुहिम छेड़ी थी और अब वह विश्व लीडर हो गई है।"

दस दिन हो गए थे। जया रोज अस्पताल अविनाश से फोन पर बात करती। वह गौरी और अम्मा की भी बात कराती।

"पापा जल्दी घर आइए। हम लोग आपकी पसंदीदा डिश शाही पनीर व गोभी के पराठे खाएंगे।" गौरी मासूमियत से कहती।

दो दिन से पापा से फोन पर बात नहीं हुई थी। फिर गौरी ने देखा, मम्मी मोबाइल देखकर रो रही है। नानी घबराते हुए जया के पास पहुंची। मोबाइल पर अविनाश के बारे में मैसेज आया था कि उन्हें आईसीयू में भर्ती कर दिया गया है और सांस ठीक से ना लेने के कारण उनको वेंटिलेटर पर रखा गया है।

"परेशान मत हो जया, तुम बहादुर लड़की हो। देवी मां सब भला करेंगी।" नानी ने ढांढस बंधाया।

"अरे अम्मां देखिए, टीवी पर समाचार में नोएडा की ग्रेट इंडिया मॉल के सामने नीलगाय खड़ी है।" रामू काका की उत्साहित आवाज़ आई ।

सब लोग टीवी के सामने आकर बैठ गए, "अरे मम्मी, वेनिस की नहरें कितनी साफ और सुंदर लग रही हैं। देखिए, हंस भी तैर रहे हैं।" गौरी ताली बजाते हुए बोली ।

समाचार में बताया जा रहा था कि विश्व भर में 203 देशों में कोरोना वायरस की वजह से इनसान घरों में

अपने लेखक को जानिए

डॉ. अनिता भटनागर जैन : 1985 बैच की भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी हैं। इनके जीवन के कई आयाम है, लेखिका, प्रशासनिक अधिकारी, अभिनेत्री, पर्यावरणविद, प्रेरक वक्ता आदि।

वर्तमान में उत्तर प्रदेश लोकसेवा अभिकरण में सदस्य व नेशनल बुक ट्रस्ट की ट्रस्टी हैं। उत्कृष्ट प्रशासनिक प्रबंधन व नेतृत्व हेतु मुख्यमंत्री उ.प्र. से, राज्य महिला आयोग से और पर्यावरण के क्षेत्र हेतु भी अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

कैद हैं, गाड़ियां ना चलने से प्रदूषण गायब हो गया है और फिर से आसमान चटक नीला दिखाई दे रहा है। दिन भर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज सुनाई पड़ती है, मानो कि शहर जंगल में बसे हों। ओजोन परत का छेद छोटा होने लगा है और बीमार पृथ्वी स्वस्थ होनी शुरू हो गई है। कोरोना वायरस की वजह से महामारी है पर पृथ्वी कंप्यूटर की भाषा में रिबूट हो रही है।

आज घर में उत्सव जैसा माहौल था। किचन से पकवानों की खुशबू आ रही थी। नानी की आरती की घंटी और शंख की ध्वनि की वजह से सब कुछ खुशनुमा लग रहा था। बाहर गाड़ी के रुकने की आवाज के साथ सब दरवाजा खोलने दौड़ पड़े।

पापा कुछ कमजोर हो गए थे, दाढ़ी बढ़ गई थी। परंतु सदा की तरह विजयी मुस्कुराहट उनकी चेहरे पर थी। आखिर कोरोना को हराकर घर लौटे थे।

"आज जब वेंटिलेटर के बिल का भुगतान किया तो मैं रोने लगा।" अविनाश ने बताया।

"वेंटिलेटर क्या होता है?" गौरी ने पूछा।

पापा बोले, "यह सांस की मशीन होती है। जब मरीज की तबीयत बहुत खराब होती है, तो इस मशीन के द्वारा मरीज के मुंह से फेफड़ों में धीरे-धीरे ऑक्सीजन भेजी जाती है। इसकी मदद से शरीर को आराम मिलता है और मरीज जल्दी ठीक हो जाता है।"

"पर पापा आप रो क्यों रहे थे? क्या बिल बहुत ज्यादा था?"

नानी बोली, "अरे मेरी बैंक की एफडी किस दिन काम आएगी?"

"नहीं अम्मा, मैं पैसे की वजह से नहीं रोया। मेरी आंखों में आंसू इसलिए आ गए क्योंकि हॉस्पिटल में 10 दिन के वेंटिलेटर के लिए तो लाखों का बिल था। बिल देते समय मैं यह सोच रहा था कि मैं 45 वर्षों से प्रकृति से ऑक्सीजन मुफ्त में ले रहा हूं। प्रकृति का बिल कितना बड़ा होगा? मैंने प्रकृति के लिए क्या किया?" अविनाश ने बताया।

सोचते हुए गौरी बोली, "पापा, हमने कभी सोचा ही नहीं कि पृथ्वी के वेंटिलेटर पेड़ है। मैं अपने जन्मदिन पर रिटर्न गिफ्ट में अपने सभी दोस्तों को पौधे दूंगी। हम सब मिलकर पार्क में न केवल पेड़ लगाएंगे, बल्कि उनका पालन-पोषण भी करेंगे। और, मैं अब स्कूल साइकिल से जाऊंगी, जिससे कि प्रदूषण कम हो और हमारी पृथ्वी बीमार ना पड़े।"

पापा ने गौरी को प्यार से गोद में उठा लिया, "माय गौरी, दी ग्रीन लीडर।"

फूला केला

फूला देखो खूब ठठाकर,
फूल बड़ा अलबेला,
ऐसा फूला लटके-लटके,
वहाँ लग गया मेला।
बाहर से इकलौता पर
भीतर से नहीं अकेला,
लाल पंखुडे झड़े तो निकले,
दाँत चियारे केला ।
केले भी दो-चार नहीं,
एक-एक दर्जन का मेला,
एक ही फूल फूलने से,
केलों से भर गया ठेला।

अरविंद कुमार 'साहू'

ये तितली

फर-फर फर-फर
ये तितली!
सैर-सपाटे को निकली!!
गेंदा कभी चमेली पर।
बैठे कभी हथेली पर।।
'आ पकडूँ!' चिंटू बोला।
ये सुनते ही उड़ निकली!!
पर पे बनी डिजाइन है।
तू लगती क्या फाइन है!!
आ! तुझ सँग सेल्फी ले लूँ!
ले! मुझको फिर छल निकली!!
फूलों सी सुन्दर दिखती।
पंखों पर कविता लिखती।।
'ले! पी ले फूलों का रस!'
पीकर आगे चल निकली!!

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'

अपने लेखक को जानिए

अरविंद कुमार साहू : 16 पुस्तकें व 500 से अधिक रचनाएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अपूर्व उड़ान, मधुर सरस एवं जागरण जंक्शन समेत कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे।

अपने लेखक को जानिए

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' : बीसीयों पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। साझा संकलनों में कविताएं और कहानियां प्रकाशित। अभी बलरामपुर, (उत्तर प्रदेश) में कर अधिकारी

खाकर भागे

उछल-कूद करते दो बंदर
पहुंचे एक शहर के अंदर
धमा-चौकड़ी खूब मचाई
कहीं पेड़ न दिए दिखाई।

नल से थोड़ा पानी पीकर
पहुँचे एक पार्क के भीतर
फूल बहुत सारे फूले थे
फिसलपट्टियां व झूले थे।

बंदर भूख-प्यास सब भूले
बच्चों जैसे झूला झूले
खेले दूब और मिट्टी पर
फिसले खूब फिसलपट्टी पर।

वहीं-कहीं पर पाया केला
पड़ा हुआ था एक-अकेला
आधा-आधा खाकर भागे
छोटा पीछे बड़का आगे

राजेन्द्र श्रीवास्तव

अच्छा लगता

कई माह से बंद पड़े हैं,
हम सब के प्यारे स्कूल।
किताब बेचारे रो रहे हैं,
कहते, मुझे न जाना भूल।।

स्कूल के कमरे न खुल रहे,
बेंचों पर जम गई है धूल।
चाक और डस्टर के बिन,
सूनी पड़ी कोने में स्टूल।।

स्कूल के गार्डन में उदास,
मुरझाए जैसे लग रहे फूल।
चुपके से फूल तोड़ ही लेते,
बच्चे नहीं मानते कोई रूल।।

ऑनलाईन क्लास पड़े न पल्ले,
स्कूल की पढ़ाई होती है मूल।
खेल कूद और पढ़ना लिखना,
बच्चों को अच्छा लगता स्कूल।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

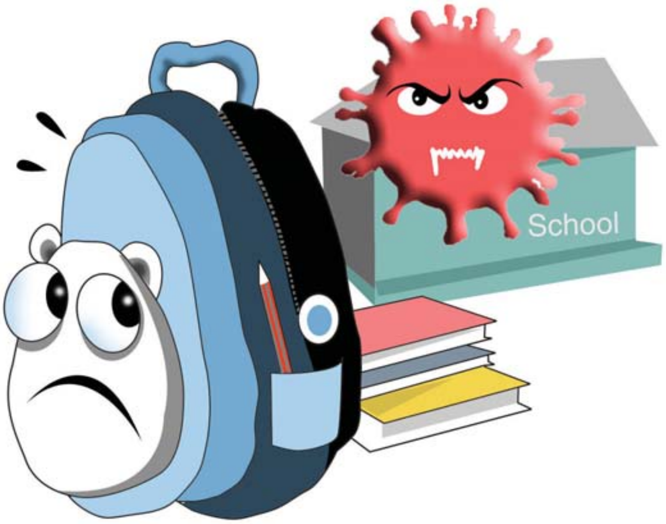

अपने लेखक को जानिए

राजेन्द्र श्रीवास्तव : सेवा निवृत्त प्राचार्य (हाई स्कूल), पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन, आकाशवाणी से भी यदा-कदा बाल कविता, कहानी का प्रसारण। बाल विधा की तीन पुस्तकें प्रकाशित।

अपने लेखक को जानिए

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव : शिक्षण कार्य के साथ कविता/कहानी/ लेख/ लघुकथा लेखन। सैकड़ों रचनाएं प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अनेक पत्रिकाओं के संपादन से जुड़े हैं।

धूप नरम-गरम

मम्मी, ठंड भरी रातों में ,
थर,थर , थरथर कांप रहे।
पहने स्वेटर मोजे, टोपी,
कितना तन को ढांप रहे।

दिन में कितनी धूप खिली थी,
पीली, चटक, गुनगनी सी।
पूरे दिन सूरज की किरणें ,
पर सूरज को जल्दी थी।

पांच बजे से भी पहले रवि,
धूप समेट ले गया क्यों ?
अगर रात में भी रह जाता ,
जाड़ा नहीं सताता यों।

अगर रात में ना रह सकता,
ऐसा तो कर सकते हैं ।
गरम, गुनगुनी धूप को भरकर,
थैले में रख सकते हैं।

कुछ डिब्बे में कुछ बक्से में,
भर कर धूप रखेंगे हम ।
जब भी हमें सताए सर्दी,
धूप निकालें नरम-गरम ।

डॉ. अलका अग्रवाल

जूँ

इल्लम-बिल्लम, झिल्लम झूं,
काली-काली जूँ ! जूँ ! जूँ !

बालों में की घुसपैठी,
खून चूसकर है बैठी !

मुनिया का सिर खुजलाया,
उसको तो गुस्सा आया !

जल्दी से कंघी लाई,
फिर जूँ की शामत आई !

मेराज रज़ा

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

डॉ अलका अग्रवाल : सेवानिवृत्त प्राचार्य, कुल 21 पुस्तकें प्रकाशित, अनेक साझा संकलनों में कविता, कहानी, आलोचना प्रकाशित। बाल साहित्य की 15 पुस्तकें प्रकाशित

अपने लेखक को जानिए

मेराज रज़ा : अध्यापक और प्रसिद्ध युवा कवि। 'मेरे मन का फूल' प्रकाशित बाल कविता संग्रह है। हिन्दी बाल साहित्य शोध संस्थान, दरभंगा द्वारा आचार्य रामलोचन शरन शिखर बाल साहित्य सम्मान।

हवेली के भूत

खजानपुर के बाहर एक पुरानी हवेली थी। अंग्रेजों के जमाने की इमारत अब खंडहर हो चली थी। मुहल्ले वालों का मानना था कि उसमें भूत रहते हैं। रात को हवेली से तरह-तरह की डरावनी आवाजें आतीं। लोग दिन में भी उधर निकलने से डरते थे।

उसी गांव में दो भाई रहा करते थे। पहाड़ जैसे हजारा सिंह और ताड़ जैसे पिटारा सिंह। अपनी कारगुजारियों से वे खजानपुर में चर्चा का विषय बने रहते थे।

एक दिन गांववालों ने इकट्ठा होकर कहा, ''हजारा-पिटारा, हमें इन भूतों से छुटकारा दिलाओ। हमें रात को डर के मारे नींद नहीं आती। बच्चे उधर खेलने-कूदने नहीं जा पाते। कुछ करो। हम भला कब तक डर-डरकर जिएं?''

रज्जो ताई बोलीं, ''एक वह भी जमाना था जब सरकारी काम से आने वाले अंग्रेज इसमें ठहरते थे। रात को वे आग जलाकर मस्ती में नाचते-गाते थे। सुनसान पड़ी हवेली से आज भी नाचने-गाने की आवाजें आती हैं।''

बल्लू काका बोले, ''मुझे एक तांत्रिक ने बताया था कि अगर कोई बहादुर पूरी रात हवेली में गुजार ले, तो भूत हवेली से भाग जाएंगे।''

''गांव में तुम जैसा बहादुर कोई दूसरा नहीं। इसलिए यह समस्या तुम्हीं निपटा सकते हो।'' कत्तो बुआ ने कहा।

''क्या कहते हो, दोस्त?'' पिटारा ने हजारा की ओर देखा।

''कहना क्या है? जो सबकी मर्जी, वही मेरी।'' हजारा ने सीना फुलाते हुए कहा।

अंधेरा गहराते ही गांव वालों ने उन्हें हवेली रवाना कर दिया।

अमावस की सर्द अंधेरी रात। हर तरफ घना कोहरा। हवा के झोंके सांय-सांय कर रहे थे। हजारा-पिटारा ने ज्यों ही हवेली में कदम रखा कि मोमबत्ती 'झप्प' से बुझ गई। जैसे किसी ने फूंक मारकर बुझा दी हो। दोनों को सर्दी में भी एड़ियों तक पसीना आ गया।

हजारा ने फुसफुसाकर कहा, ''यार पिटारा, मुझे तो लगता है, भूत ने फूंक मारकर हमारी मोमबत्ती बुझा दी है।''

''अरे नहीं, हिम्मत रखो, मोमबत्ती हवा की वजह से बुझी होगी।'' पिटारा बोले, ''और अगर हम भागे, तो गांव भर को खबर हो जाएगी। बहुत हंसी उड़ेगी।''

दोनों 'भूत-पिशाच निकट नहीं आवैं' बुदबुदाते हुए अंदर बढ़ चले। अंदर घुसते ही शहनाई की आवाज गूंजी और फिर ढोलक की 'थप-थप'। फिर ढेर सारे घुंघरुओं की 'छन्न-छन्न'।

डर के मारे हजारा-पिटारा ने किसी तरह संभलकर मोमबत्ती जलाई। मंद-मंद उजाला फैला, तो देखा कमरे की पुरानी खिड़कियां हवा से खुल रही हैं और आवाज कर रही हैं। दरवाजे के पल्ले भी 'थप-थप' की आवाज कर रहे हैं। ऊपर लटके झूमर के हिलने से घुंघरुओं की रुन-झुन सुनाई दे रही है। हजारा लंबी सांस लेकर बोले, ''धत्त तेरे की,

मेरी तो जान ही निकल गई थी।"

अभी वे बातें कर ही रहे थे कि अचानक हजारा की पगड़ी हवा में उछल गई और उड़ने लगी। दोनों थर-थर कांप उठे। हजारा ने पगड़ी को लपकने की कोशिश की, तो वह छत पर जा अटकी।

पिटारा कंपकंपाती आवाज में बोले, "यार, मेरी मानो चुपचाप भाग चलो। अभी तो पगड़ी उड़ी है, भूत कहीं हमारा सिर न उड़ा दे।"

तभी पगड़ी धन्नियों से नीचे टपक पड़ी और उसके अंदर से एक चमगादड़ निकलकर भागा। पिटारा का रुख फौरन बदल गया। बोले, "मैं तो पहले ही कह रहा था, भूत-वूत कुछ नहीं होता।"

तभी अचानक सामने वाले कमरे में एक साया भागता हुआ दिखा। पिटारा के रोंगटे खड़े हो गए। उन्होंने हजारा को झिंझोड़ा और बोले, "हजारा, अभी सामने वाले कमरे से एक साया निकलकर भागा है।"

हजारा बोले, "पर मुझे तो लगता है, यह भी हमारा भ्रम होगा।'

दोनों उठे और कमरे की ओर बढ़ने लगे। कुहरे के कारण उन्हें कुछ दिख नहीं रहा था। तभी उनकी आहट पाकर, एक कोने में कुछ हिला। दोनों के रोंगटे कांटों की तरह उभर आए। फिर तो कमरे में जैसे भूचाल आ गया। इधर छन्न-छनाक, उधर धूम-धड़ाम। ढेर सारे काले साए कमरे में इधर-उधर छलांगें लगाने लगे। हजारा-पिटारा डर के मारे एक कोने में लुढ़क गए। पर उन्हें पता चल गया कि यह बंदरों का झुंड है, जो सर्दी से बचने के लिए यहां दुबका हुआ था।

हजारा-पिटारा पर बंदरों का ऐसा खौफ जमा कि भूत का क्या होता। वे वापस बाहर की ओर भागे। पर बंदर अपनी आराम में बाधा पड़ने से खिसियाए हुए थे। वे भी उनके पीछे-पीछे झपटे।

अब तो आगे-आगे हजारा-पिटारा और पीछे-पीछे बंदरों का झुंड। इस कमरे से उस कमरे, इस कोठरी से उस कोठरी। ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर घुड़दौड़ होने लगी।

उधर गांववालों ने हवेली में होती हलचल सुनी, तो उन्हें लगा कि हजारा और पिटारा भूतों से जमकर मुकाबला कर रहे हैं। इसी भागदौड़ में सुबह हो गई और बंदर खाने-पीने की तलाश में इधर-उधर हो लिए।

तब तक गांववाले शोर मचाते हुए हवेली की ओर भागे आए। हजारा-पिटारा को सलामत देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने हजारा-पिटारा को कंधों पर उठा लिया और उनकी जय-जयकार करने लगे।

पर भूतों की असलियत तो हजारा-पिटारा ही जानते थे। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. मोहम्मद अरशद खान : कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। अच्छे और प्रसिद्ध बाल कहानीकार। बच्चों के लिए उपन्यास, कविता एवं कहानी विधा की बाल 14 पुस्तकें प्रकाशित। कई पुस्तकों का मराठी, अंग्रेजी, उड़िया और गुजराती भाषा में अनुवाद। भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं हरिकृष्ण देवसरे सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त।

बसंत ऋतु का आगमन यानी प्रकृति में खूबसूरती का पसर जाना। चाहे तरह-तरह के फूल हों या फिर रंग-बिरंगी तितलियां। बसंत ऋतु को तितलियों का महीना भी माना जाता है।

रंग-बिरंगी तितलियां

क्या हैं तितलियां

तितली कीटवंश का प्राणी है। अन्य कीटों या (insects) की तरह इसके शरीर के तीन मुख्य अंग होते हैं. सिर, धड़ और पेट। सिर के पास दो डंडियां होती हैं जिसे एंटीना कहते हैं। इनसे वह स्पर्श और सूंघने का कार्य करती हैं।

कहने को इनके पास दो आंखें होती हैं, पर इनके पास दो आंख न होकर छोटे छोटे नेत्र ग्रंथियां होती हैं, इसी के कारण तितलियां अपने पीछे भी देख पाती हैं। एक तितली के पास लगभग 1200 नेत्र समह होते हैं।

इनके पास एक पतली सी सूढ़ होती है, जिसे प्रोविसिस कहते हैं, इसी के सहारे वे फूलों का रस पीती हैं। फूलों का रस या नेक्टर ही इनका मुख्य जीवन आहार होता है।

तितली का जीवन चक्र

तितली का जीवन चक्र चार रूपों से होकर गुजरता है। अंड, लार्वा, प्यूपा और पूर्ण तितली।

आप अपने घरो में लगे बागों में देखे होंगे, पत्तों पर बहुत छोटे अंडेनुमा गुच्छे, थोड़े चिपचिपे से। यही तितलियों के अंडे होते हैं। तितलियां एक बार में बहुत अंडे देती हैं। धीरे-धीरे ये लार्वा में बदल जाते हैं। लार्वा या कैटरपिलर।

लार्वा की स्थिति में ये खूब खाते हैं। खाने में मुख्य आहार पत्ते ही होते हैं। खूब खाने के कारण ये बहुत तेजी से विकसित होते हैं। बड़े होने के साथ इनका बाहरी कवच कड़ा होने लगता है। जब पूरी तरह से इनका खाल कड़ा हो जाता है तो यह फट जाता है। फटने से इसके भीतर से बहुत महीन रेशम के धागों जैसी संरचना निकलती जाती है। लार्वा अपने अंदर के एन्जाइम से इसे एक खोल में परिणत कर देता है। वह खुद को इस खोल में बंद करके किसी पेड़ की शाखों से लटका लेता है।

कुछ दिनों में यह लार्वा अपने आप को तितली में बदल देता है। जब तितली अपने खोल से बाहर आती है तो उसके पंख गीले रहते हैं, जिसे वह फड़फड़ाकर सुखा लेती है। जब इनका गीलापन सूख जाता है तब ये उड़ने के लिए तैयार हो जाती हैं। इस अवस्था में इनका मुख्य काम फूलों को ढूंढ़कर रस पीना ही होता है।

तितलियों का जीवन बहुत ही अल्प होता है। मुश्किल से ये तीन से चार हफ्तों तक जीती हैं।

सबसे बड़ी बात कि इनका स्केलेटल यानि कंकाल इनके शरीर के बाहर होते हैं।

अपने लेखक को जानिए

सीमा सहाय : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। कहानी संग्रह प्रकाशित। साहित्य समर्था 2018', 'श्रेष्ठ कहानी' पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिंदगी द्वारा आयोजित2020, 'उत्कृष्ट बाल रचना' सम्मान । पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

तितलियों के बारे में कुछ और भी जान लो...

- पूरी दुनिया में तितलियों की लगभग बीस हजार प्रजातियां हैं।
- सबसे बड़ी यानी विशालकाय तितली जायंट बर्डविंग है। ये सोलमन द्वीप समूह में पाई जाती हैं। इनके पंखों का फैलाव लगभग 12 से 15 इंच तक होता है।
- दुनिया की सबसे तेज उड़ने वाली तितली मोनार्च है। ये 1घंटे में लगभग 17 किलोमीटर तक उड़ सकती हैं। कोस्टारिका समुद्र तट पर मोनार्च की सबसे अधिक प्रजातियां मिलती हैं।

- भारत में तितलियों के लगभग 1500 से ऊपर प्रजातियां पाईं जाती हैं। पर आज के कंक्रीट लाइफ स्टाइल में इनका भविष्य बिखरने लगा है।
- तितलियों को बचाने के लिए ही सबसे पहले बन्नैघाटा राष्ट्रीय उद्यान में तितली पार्क बनाया गया। 2007 से वहां अनेक प्रकार की तितलियों का संरक्षण किया जा रहा है।
- इसके अलावा ठाणे, शिमला, दिल्ली और पोखरण में भी तितलियों की कई प्रजातियों का विकास किया जा रहा है।
- राजधानी दिल्ली में टाइगर प्लेन तितली को खास तौर पर संरक्षण देने का प्रयास किया जा रहा है।

रानू की सूझबूझ

"यह तुम क्या कह रहे हो? सोचो, अगर मगर को पता चला, तो तुम्हारे साथ-साथ हम सभी की जान खतरे में पड़ जाएगी।" चंचल मछली ने रानू कछुए से कहा ।

"दीदी, क्या हम यूं ही डर-डर कर अपना जीवन बिता देंगे? आखिर यह जल हमारा भी तो घर है।" रानू बोला ।

"पर अचानक ऐसा क्या हुआ कि तुम मगर को सबक सिखाने की बात करने लगे हो?"

"इस तालाब में मेरे और आपके जैसे हजारों जीव-जंतु रहते हैं पर हम कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते। पर इस मगर ने जैसे खुद को यहां का बॉस समझ रखा है। जब उसका मन करता है, वह किसी भी जीव को निगल लेता है और हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते।"

"क्या तुमने वह कहावत नहीं सुनी कि जल में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं किया जाता? तुम अभी नए-नए इस तालाब में आए हो। तुम्हें यहां के तौर-तरीके शायद मालूम नहीं है।" चंचल ने रानू को समझाने की गरज से कहा।"

"दीदी मैं यहां नया भले ही हूं, पर यह बात मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि यहां के सभी निवासी इस मगर की दादागिरी

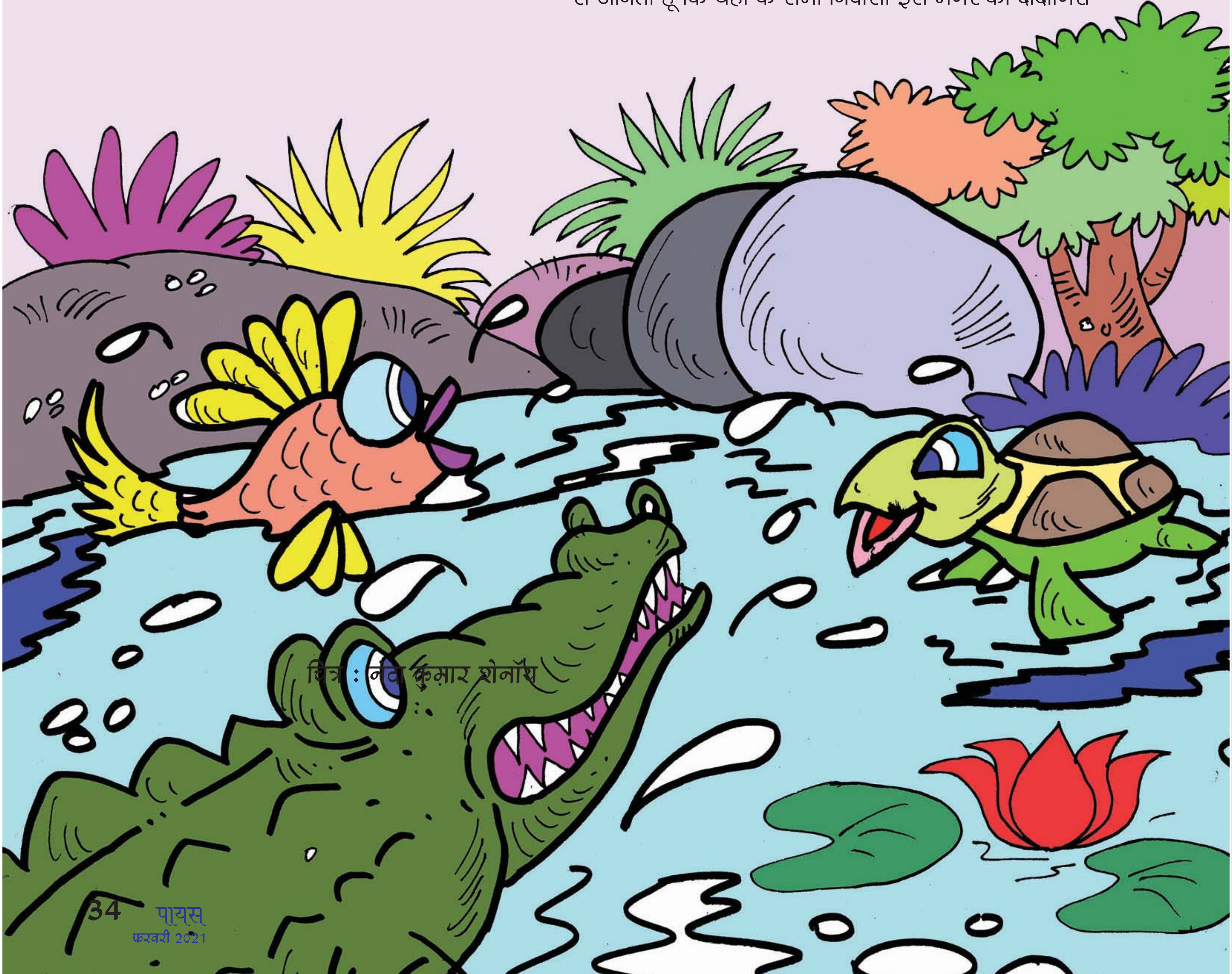

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

से तंग आ चुके हैं। सभी चाहते हैं कि हम सब बिना किसी डर-भय के मिल-जुलकर रहें।" रानू के शब्दों में आत्मविश्वास झलक रहा था।

चंचल मछली कुछ कहती, इससे पहले ही मगरमच्छ सामने से तैरता हुआ आता दिखा। दोनों एक पल के लिए चुप हो गए।

दरअसल पिछले दिनों सोनू केकड़े की बर्थडे पार्टी में मगर ने पहुंचकर जो हरकत की, तब से रानू ने तय कर लिया कि वह मगर को सबक सिखाकर रहेगा। सोनू के केक काटने से पहले ही मगरमच्छ ने सारा केक खुद खा लिया और वहां रखे पकवान भी हजम कर गया। पार्टी का मजा किरकिरा हो चुका था। मगर ठहाके लगाता हुआ वहां से चला गया। किसी की समझ में नहीं आया कि वे सब करें, तो क्या करें।

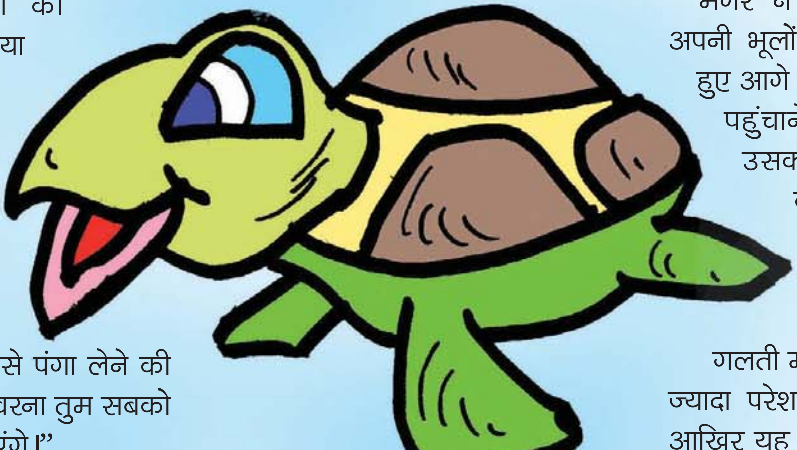

रानू भी पार्टी में मौजूद था। उसने पहले तो जाकर मगरमच्छ से बात की। मगर ने धमकी दी, "मुझसे पंगा लेने की तो सोचना भी मत। वरना तुम सबको लेने के देने पड़ जाएंगे।"

उसकी धमकी सुनकर रानू ने सोच लिया कि यह मगर बातों से मानने वाला नहीं है। फिर उसने एक योजना बनाई।

उसके पास लकड़ी की एक लंबी सी बांसुरी थी जो तालाब के किनारे खेलते हुए किसी लड़के के हाथ से पानी में गिर गई थी। रानू ने बांसुरी उठाई और बैठकर मजे से बजाने लगा। बांसुरी की तान सुनकर तालाब के सारे जीव जंतु झूमने लगे।

"ला, यह बांसुरी मुझे दे दो। इसे मैं बजाऊंगा।" तभी आवाज सुनकर मगरमच्छ भी वहां आ पहुंचा।"

"नहीं अंकल, यह मेरी है इसे मैं बजाऊंगा।" रानू ने जान-बूझकर आनाकानी की। मगर भी जिद पर अड़ गया, तो रानू को मौका मिल गया।

"ठीक है। चलो, खोलो अपना मुंह, मैं तुम्हें बांसुरी बजाना सिखाता हूं।" रानू ने हां कहा, तो मगर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे सपने में भी गुमान नहीं था कि रानू क्या करने वाला है।

जैसे ही मगर ने अपना मुंह खोला, रानू ने बांसुरी उसके दोनों जबड़ों के बीच में फंसा दी। बजाना तो दूर रहा, मगर का मुंह अब खुला का खुला ही रह गया। वह अपना मुंह बंद भी नहीं कर सकता था।

"यह तुमने क्या कर दिया दुष्ट। इसे हटाओ जल्दी, वरना मैं तुम्हें कहीं का न छोड़ूंगा।" मगर बड़ी मुश्किल से बोल पाया।

"नहीं अंकल, अब तुम हमेशा ऐसे ही रहोगे। बहुत तंग कर लिया तुमने हम सभी को।" कहकर रानू जाने लगा, तो मगर को रोना आ गया। वह बोला, "मुझे माफ कर दो। आइंदा, मैं कभी किसी को नहीं तंग करूंगा।"

तब तक तालाब की सारे प्राणी भी वहां जमा हो चुके थे। वे सब मगर का हाल देखकर खुश थे।

मगर ने उन सभी के सामने अपनी भूलों के लिए माफी मांगते हुए आगे कभी किसी को कष्ट ना पहुंचाने की कसम खाई। उसकी हालत देखकर सभी को उस पर दया आ गई।

तभी चंचल मछली ने वहां आकर कहा, "रानू, इसने अपनी गलती मान ली है। अब हमें इसे ज्यादा परेशान नहीं करना चाहिए। आखिर यह भी तो हमारी तरह इस तालाब का प्राणी है।"

सब ने उसकी बात का समर्थन किया। रानू ने मगर के मुंह में फंसी बांसुरी को निकाल दिया ।

"तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद भाई। आज के बाद तुम सबको मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। तुम सब यहां आजादी के साथ रह सकते हो।" कहकर मगर वहां से चुपचाप चला गया।

सभी प्राणियों ने रानू की तारीफों के पुल बांध दिए, जिसने मगर को सही रास्ते पर लाकर उन सबका जीवन सुरक्षित बना दिया था। ✪

अपने लेखक को जानिए

इंद्रजीत कौशिक : पिछले 40 वर्षों से बाल साहित्य के क्षेत्र में रचना कर्म। अब तक केवल एक ही पुस्तक प्रकाशित हुई मूछों वाले मामा जी के नाम से जिस पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य का शंभू दयाल सक्सेना पुरस्कार मिला। देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन।

संप्रति : भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत

मोहम्मद सिराज

उड़ने के लिए पंख नहीं, हौसले की जरूरत होती है

मोहम्मद सिराज हैदराबाद के रहने वाले हैं। 13 मार्च 1994 को हैदराबाद में ही सिराज का जन्म हुआ। बचपन से ही वह अभाव का सामना करते रहे। बंजारा हिल्स में रहने वाले उनके पिता एक ऑटो रिक्शा ड्राइवर थे। ऐसे में कोई शौक पालना किसी बच्चे के लिए आसान नहीं होता।

सातवीं कक्षा में पहुंचने के बाद उनके जीवन में बदलाव आया। मोहम्मद सिराज के कारण उनके स्कूल ने इंटर स्कूल क्रिकेट टूर्नामेंट जीता। इसके बाद क्रिकेट के प्रति सिराज की दीवानगी बढ़ी।

गरीबी का आलम यह था कि मोहम्मद सिराज अपने खेल को निखारने के लिए किसी कोच के पास भी नहीं जा सके। वह 2015 में अपने दोस्त के के साथ चारमीनार क्रिकेट क्लब में गए और पहली बार क्रिकेट की असली लेदर बॉल से बॉलिंग की। उनकी बॉलिंग देख क्लब ने उन्हें अपने साथ जोड़ लिया।

क्लब के लिए खेलते-खेलते एक साल के अंदर ही उनका चयन हैदराबाद की तरफ से खेलने के लिए रणजी ट्रॉफी टीम में भी हो गया। फिर भारत के अंडर 23 टीम में भी उन्हें चुना गया। सिर्फ 2 साल में मोहम्मद सिराज का इतना नाम हो गया कि आईपीएल में सनराइजर हैदराबाद की टीम ने करीब ढाई करोड़ रुपए में उन्हें अपने साथ जोड़ा। अभाव में जीवन बिताने वाले मोहम्मद सिराज के लिए यह सब किसी सपने से कम नहीं था।

अपनी तेजी से मोहम्मद सिराज ने सबका ध्यान खींचा और उन्हें भारत ए टीम के साथ जुड़ने में देर नहीं लगी। लगातार शानदार प्रदर्शन के बाद उनका चयन ऑस्ट्रेलिया जाने वाले इंडियन क्रिकेट टीम में हो गया

मोहम्मद सिराज के पिता सिराज को टेस्ट मैच खेलते देखने के लिए बहुत उत्सुक थे। परंतु सिराज के ऑस्ट्रेलिया पहुंचते ही कुछ दिनों बाद उनके पिता की मृत्यु हो गई। घरवालों की सलाह पर सिराज ने ऑस्ट्रेलिया में ही रहने का फैसला किया।

सिराज की कुर्बानी रंग लाई और दूसरे टेस्ट मैच में उन्हें भारतीय टीम में शामिल किया गया। उनके कारण भारत ने पहला मैच हारने के बाद भी श्रृंखला में 2-1 से जीत हासिल की।

मोहम्मद सिराज जब भारत लौटे, तो हैदराबाद के एयरपोर्ट से घर न जाकर सीधे अपने पिता के कब्र पर पहुंचे और उन्हें श्रद्धांजलि दी।

सिराज को खुशी थी कि उन्होंने अपने प्रदर्शन से पिता को जन्नत में भी खुश होने का मौका दिया।

ऋषभ पंत

क्रिकेट का नया हीरो

ऋषभ पंत भारतीय क्रिकेट के नए हीरो हैं। छोटे कद के परंतु ऊंचे हौसले वाले ऋषभ पंत ने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध भारत को जिताने में बड़ी भूमिका निभाई। परंतु यहां तक पहुंचना ऋषभ पंत के लिए आसान नहीं था।

ऋषभ पंत का जन्म 4 अक्टूबर 1997 को उत्तराखंड के रुड़की में हुआ। उनके पिता का नाम राजेंद्र पंत और मां का नाम सरोज पंत है। बचपन से ही ऋषभ पंत को क्रिकेट का बहुत शौक था। ऐसे में परिवार ने निर्णय लिया कि क्रिकेट के दीवाने ऋषभ प्रतिभा को नहीं दबाएंगे

यहां से ऋषभ पंत और उनकी मां का संघर्ष शुरू हुआ। उस समय ऋषभ पंत केवल 12 वर्ष के थे। परंतु हौसला इतना था कि शुक्रवार की रात को 12 साल का बालक अपनी मां के साथ दिल्ली के लिए चल पड़ता था। कारण था, शनिवार और इतवार की छुट्टी में दिल्ली के प्रसिद्ध क्रिकेट कोच तारक सिन्हा से क्रिकेट के गुर सीखने की ललक। दोनों मां-बेटे दिल्ली आकर मोती बाग के गुरुद्वारे में ठहरते। इस तरह दोनों दिन ऋषभ पंत खूब क्रिकेट खेलता और इतवार की रात दोनों वापस रुड़की जाते।

उनकी प्रतिभा को देख तारक सिन्हा ने सुझाव दिया कि ऋषभ पंत को राजस्थान चले जाना चाहिए। वहां अंडर 13 टीम में चुने जाने का अच्छा मौका था। परंतु ऐसा होना पाया।

आखिर ऋषभ पंत के पिता ने फैसला किया कि वह दिल्ली शिफ्ट हो जाएंगे। सिर्फ 3 साल की कड़ी मेहनत के बाद उसका भारत के अंडर-19 वर्ल्ड कप क्रिकेट टीम में चुनाव हो गया। इस टीम के कप्तान बने झारखंड के ईशान किशन और उपकप्तान थे ऋषभ पंत।

तब तक ऋषभ पंत की बल्लेबाजी का इतना नाम हो चुका था कि 2016 के आईपीएल टूर्नामेंट के लिए खिलाड़ियों की बोली लगी, तो दिल्ली डेयरडेविल्स टीम ने उन्हें एक करोड़ नब्बे लाख में अपने साथ जोड़ा। उस दिन उन्होंने अंडर-19 विश्व कप में शतक लगाकर दिखाया कि यह कीमत पाने के सचमुच अधिकारी हैं।

यहां से ऋषभ पंत ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और 1 साल के अंदर ही 2017 में उन्हें भारतीय टीम में शामिल कर लिया गया और 1 फरवरी 2017 को उन्होंने अपना पहला इंटरनेशनल मैच खेला।

आज ऋषभ पंत भारतीय टीम के स्थायी सदस्य हैं। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध चौथे टेस्ट मैच की चौथी पारी में नाबाद 89 रन बनाकर भारत को टेस्ट के साथ श्रृंखला में विजयी बनाया।

जादू घर

इंडियन म्यूजियम

क्या खोया, क्या पाया आओ, अतीत की सैर कर पता करें

किसी भी देश के लिए उसका इतिहास, वहां का रहन-सहन, संस्कृति का बहुत महत्त्व होता है। भारत जैसे विशाल और प्राचीन देश के इतिहास को सहेजना बड़ा मुश्किल कार्य है। इस कार्य को कोलकाता का ऐतिहासिक इंडियन म्यूजियम बड़ी खूबी से कर रहा है। यही नहीं, यहां हम विदेश से आई अनोखी वस्तुओं को भी देख सकते हैं।

कोलकाता का इंडियन म्यूजियम को देखना किसी जादुई नगरी की सैर से कम नहीं है। शायद इसीलिए कोलकाता के लोगों में यह संग्रहालय जादू घर के नाम से प्रसिद्ध है।

यह इंडियन म्यूजियम यानी भारतीय संग्रहालय, भारत का सबसे बड़ा और सबसे पुराना संग्रहालय है। यही नहीं, यह विश्व का 9वां सबसे प्राचीन संग्रहालय है। इसकी शुरुआत का श्रेय 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के संस्थापक सर विलियम जोंस को जाता है। इसमें संग्रह की गई अद्भुत वस्तुओं को देखकर उस समय की सरकार ने इसके लिए चौरंगी-पार्क स्ट्रीट इलाके में जगह दी। तब जाकर आज की यह इमारत बनाई गई। 3 फरवरी 1814 को इसका उद्घाटन हुआ। एक डच जीव विज्ञानी नथानियल वालिच ने एशियाटिक सोसाइटी के साथ अपनी संग्रहीत वस्तुए भी यहां प्रदर्शित करने के लिए दीं। वालिच ही इस भव्य संग्रहालय के प्रथम क्यूरेटर बने।

यहां प्राचीन वस्तुओं, कवच, गहने, जीवाश्म, कंकाल, ममी, और मुगल चित्रों का दुर्लभ संग्रह है। यहां आप मिस्र से लाई गई चार हजार साल पुरानी ममी के साथ मैमल, डायनासोर और अनेक लुप्त हो चुके जानवरों के असली कंकाल भी देख सकते हैं।

इसके कुल 6 खंड हैं। कला, पुरातत्व, मानव विज्ञान, भूविज्ञान, प्राणी शास्त्र और आर्थिक वनस्पति विज्ञान। प्रत्येक खंड अपने आप में मानव सभ्यता के विकास और विनाश की कहानियों को समेटकर आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने में सक्षम है। यह संग्रहालय इतना विशाल और समृद्ध है कि एक दिन में इसे घूमकर देखना और समझना असंभव है।

यह संग्रहालय संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन है। सन 2014 में इस संग्रहालय ने 200 वर्ष पूरे कर लिए हैं। ✪

मुख्य इमारत

डायनासोर के दर्शन

मिस्र की अनोखी प्राचीन मूर्ति

हड़प्पा कालीन मानव खोपड़ी

मिस्र से लाई गई
4000 साल पुरानी ममी

भारतीय नौका की कहानी

मंदिर की कलाकृति

मैमल का कंकाल

परीक्षा का मंत्र

आज जब क्लास टीचर ने पहले क्लास टेस्ट का रिजल्ट सुनाया, तो सब हैरानी से मेहुल की तरफ देख रहे थे। दो महीने पहले नया आया दुबला-पतला मेहुल, जिसकी तरफ किसी का ध्यान तक नहीं गया था, आज इस रिजल्ट के बाद क्लास का हीरो बन बैठा था।

"क्या हुआ विक्की? वन मैन शो खत्म हो गया क्या?" राजू ने विक्की का मजाक उड़ाया।

"नहीं राजू! इसे सेर को सवा सेर मिलना कहते हैं।" विहान ने भी मजाक में उसका साथ दिया और इसके साथ ही पूरी क्लास में जोरदार ठहाका गूंज उठा।

तभी पीरियड खत्म होने की घंटी बजी और शेखर सर मेहुल की पीठ थपथपाते हुए क्लास से चले गए।

विक्की यह जानने के लिए बेचैन था कि मेहुल ने आखिर कॉपी में ऐसा क्या लिख दिया कि उसका एक भी नंबर नहीं कटा।

आधी छुट्टी में वह सर के पास गया। उसने सर से आग्रह किया, "सर! मैं मेहुल की कोपियां देखना चाहता हूं।"

"हां-हां! क्यों नहीं। बल्कि मैं तो खुद सब बच्चों को उसकी कॉपी दिखाना चाह रहा हूं। कहीं कोई गलती नहीं। मात्राओं, स्पेलिंग्स और प्लस-माइनस को तो छोड़ो, कहीं कौमा तक लगाने में गलती नहीं की उसने। नंबर कटने की कोई गुंजाईश ही नहीं।" कहते हुए सर ने मेहुल की उत्तर पुस्तिकाएं विक्की के सामने रख दी। विक्की भी हैरान था। कहीं कोई गलती नहीं थी।

वह घर आया, तो कुछ अनमना सा था। उसने मां को सारी बात बताई। मां ने उसे प्यार से समझाया, "कोई बात नहीं। यह तो पहला ही क्लास टेस्ट था। अभी तो बड़ी परीक्षाएं बाकी हैं। लेकिन हां! ये तो तय है कि अब तुम्हें अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। वैसे ये अच्छी बात भी

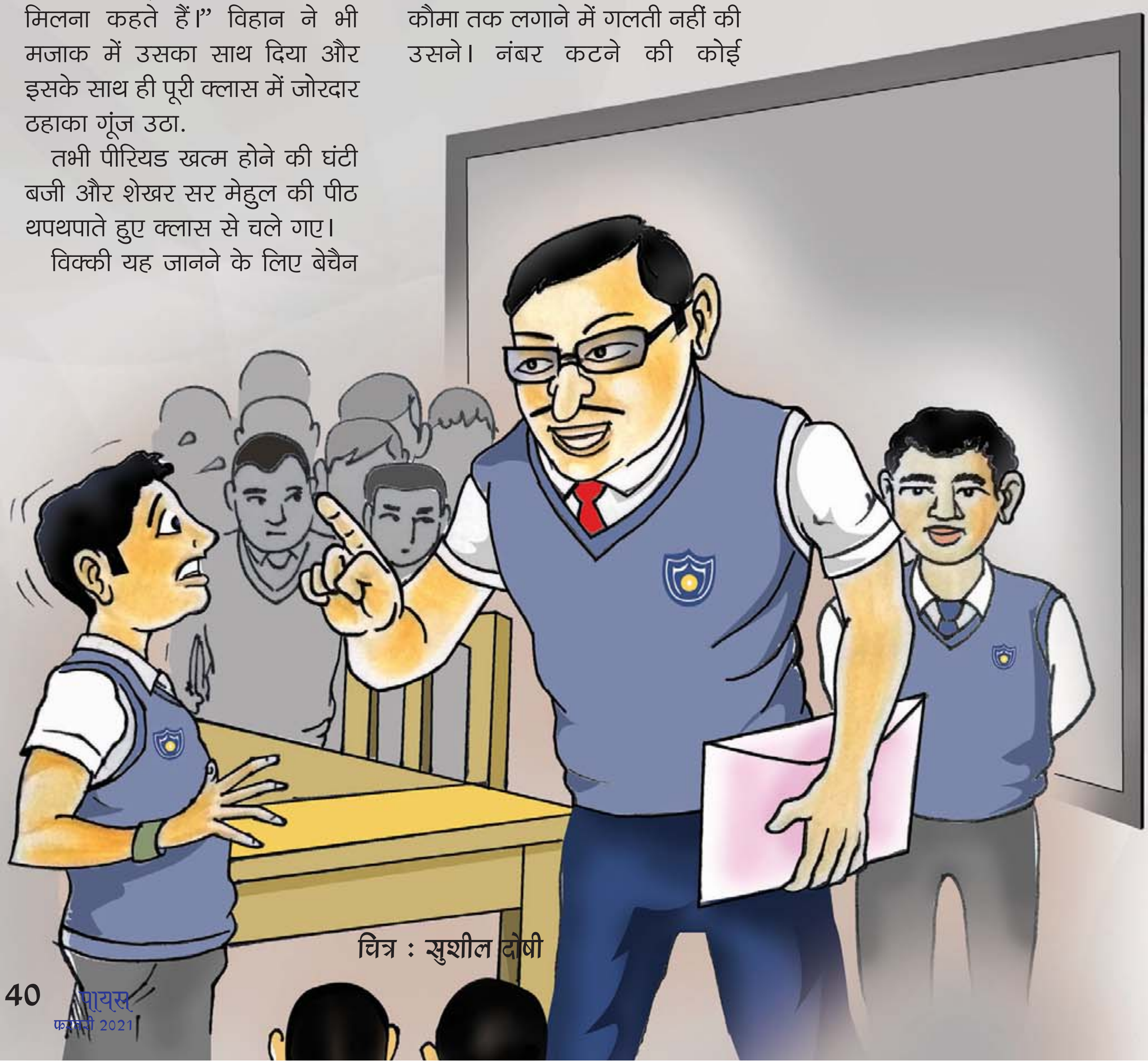

चित्र : सुशील दोषी

है। इसी तरह की स्वस्थ प्रतिस्पर्धाएं हमें सफलता का रास्ता दिखाती हैं।"

विक्की अब पहले से भी अधिक मेहनत करने लगा। गणित के सभी सूत्र और विज्ञान के नियमों को समझने की भरपूर कोशिश करता। न समझ आने पर बार-बार पूछता। कभी सर से तो कभी दोस्तों से।

इसी तरह साल बीत रहा था। दूसरे क्लास टेस्ट का रिजल्ट भी पहले जैसा ही था। इस बार भी मेहुल को पूरे मार्क्स मिले थे, वहीं विक्की के कुछ नंबर कट गए थे। यानी इस बार भी मेहुल अपना पहला स्थान बनाए रखने में कामयाब हुआ था। विक्की फिर मायूस हो गया।

"मां! इतनी मेहनत करने के बाद भी मैं सेकंड आया।" घर पहुंचते ही वह रो पड़ा।

"इस तरह निराश नहीं होना चाहिए। क्लास में इतने सारे बच्चे हैं। कोई न कोई तो फर्स्ट आएगा ही ना! अभी तो दो मेन एग्जाम बाकी हैं। तुम और अधिक मेहनत करो। मेहुल से जानने की कोशिश करो कि वह किस तरह अपनी पढ़ाई करता है।" मां ने उसे समझाया।

"हम सबने उसकी कॉपी देखी थी मां! उसके सभी जवाब बहुत अच्छे से लिखे हुए थे। कौमा तक की गलती नहीं थी।" विक्की ने बताया।

"मतलब, तुम्हें अभी और मेहनत करने की जरूरत है। इस बार तुम अपना पूरा कोर्स लिख-लिखकर याद करना।" मां ने सलाह दी।

"लिख-लिखकर क्यों? वह तो हम होमवर्क के समय लिखते ही हैं।" विक्की को मां की बात सुनकर आश्चर्य हुआ।

"वह इसलिए कि हमारा दिमाग पढ़े हुए से अधिक लिखे हुए को याद रखता है, क्योंकि लिखा हुआ पाठ दो बार हमारे दिमाग से होकर गुजरता है, एक बार पढ़ते समय और दूसरी बार लिखते समय।" मां ने सरल शब्दों में समझाया, तो विक्की ने इस बार ऐसा ही करने की हामी भरी।

विक्की अर्द्धवार्षिक परीक्षा की तैयारी में जोर-शोर से जुटा था। इस बार वह हर लेसन को लिख-लिखकर याद कर रहा था। परीक्षा के बाद उसे पूरा विश्वास था कि इस बार वह अपना पहले वाला स्थान प्राप्त कर लेगा।

इस बार रिजल्ट सचमुच उसकी आशा के अनुसार निकला। इस बार उसके और मेहुल के नंबर बराबर थे। विक्की का आत्मविश्वास लौटने लगा। अब उसे परीक्षा की तैयारी करने का मूलमंत्र जो मिल गया था.

अब फाइनल एग्जाम आने वाले थे। सभी विषयों का सिलेबस पूरा हो चुका था। अब रिवीजन चल रहा था। प्री एग्जाम में कभी विक्की आगे, तो कभी मेहुल आगे रहता था। क्लास में रोचक प्रतियोगिता सा माहौल था।

परीक्षा हो गई। विक्की और मेहुल दोनों ही अपनी-अपनी सफलता को लेकर आश्वस्त नजर आ रहे थे।

आज रिजल्ट घोषित होने वाला था। सभी बच्चे अपनी-अपनी क्लास में इकट्ठा होकर क्लास टीचर का इंतजार कर रहे थे। शेखर सर ने आते ही सबको शुभकामनाएं दी और रिजल्ट बताने के लिए मार्क्सशीट खोल ली।

"मेहुल और विक्की! तुम दोनों यहां इस तरफ खड़े हो जाओ।" सर ने कहा, तो दोनों एक-दूसरे का मुंह देखते हुए उठ गए।

"विक्की! तुमने बहुत अच्छे पेपर दिए हैं। हर उत्तर में तुम्हारी मेहनत दिखाई दे रही है, शाबास!" उन्होंने विक्की को बधाई दी।

"मेहुल! मेहनत तो तुमने भी की है लेकिन कई प्रश्न तुमने अधूरे क्यों छोड़ दिए?" सर ने पूछा।

"वो..., मैं बीच-बीच में भूल गया था।" मेहुल ने सिर झुकाकर कहा।

"भूल गए थे? तो क्या तुम प्रश्नों के उत्तर रट कर याद करते हो?" सर को आश्चर्य हुआ।

"जी सर।" मेहुल ने कहा।

"ओह! अब समझा। तभी तुम्हारे जवाबों में कौमा तक की गलती नहीं होती थी। अब तुम सब रटने और समझकर याद करने के फर्क को अच्छी तरह से समझ गए होगे। रटने से कुछ समय के लिए तो याद रह सकता है, लेकिन समझ और लिखकर याद किया हुआ उत्तर हमें जिंदगी भर याद रहता है। इसी मेहनत का नतीजा है कि विक्की इस बार भी अपनी क्लास में पहले स्थान पर आया है।" सर ने कहा तो सब बच्चे तालियां बजाने लगे।

सभी को परीक्षा का मूल मंत्र जो मिल गया था। ✪

अपने लेखक को जानिए

आशा शर्मा : राजस्थान सरकार के विद्युत विभाग में सहायक अभियंता। साथ ही लेखन भी। अब तक 6 संग्रह प्रकाशित। करीब बीस पत्र-पत्रिकाओं में सैंकड़ों रचनाएं प्रकाशित। राजस्थान साहित्य अकादमी एवं जिला प्रशासन, बीकानेर सहित दर्जनों राष्ट्रीय स्तर के सम्मान एवं पुरस्कार। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर रचनाएं प्रसारित। रचनाओं का नेपाली, अंग्रेजी, पंजाबी, उड़िया, सिंधी, कन्नड़, तमिल एवं राजस्थानी भाषा में अनुवाद

आइवर यूशिएल

जीव-जन्तुओं का
अद्भुत संसार
वैम्पायर
नामक चमगादड़ सोते हुए जानवरों के शरीर में अपने पैने-नुकीले अग्रदंत गढ़ा कर जीभ द्वारा इनका खून चाट जाता है।
पेलिकन
पक्षी लगभग आधा मीटर तक का गोता लगाकर अपनी बड़ी-सी चोंच में एक साथ ढेर सारी मछलियां पकड़ लाता है जिन्हें यह फिर धीरे-धीरे गटकता रहता है।
एस्टुएरी
मगरमच्छ ऑस्ट्रेलिया के समुद्री तट पर पाया जाने वाला छह मीटर तक का सबसे लम्बा मौजूदा सरीसृप है।
इम्पीरियल एंजिल फ़िश
अपनी शोख़ चटखदार धारियों की बदौलत मूंगे की चट्टानों के बीच पूरी तरह घुल मिल जाती हैं और इस तरह अपने शत्रुओं से अपना बचाव कर लेती है।

हंसना जरूरी है

एक बच्चा (डाकिए से)–"मेरा पत्र दे दो।"
डाकिया–"क्या नाम है आपका?"
बच्चा–"अरे चिट्ठी पर देख लो, उस पर लिखा होगा।"

एक आदमी (मित्र से)–"तुमने अपनी एक महीने की छुट्टियां कहां बिताईं?"

मित्र–"एक दिन घुड़सवारी में तथा तीस दिन अस्पताल में।"

मां–"बेटा, क्या कर रहे हो?"

बेटा–"मां, पढ़ रहा हूं।"

मां (खुश होकर)–"अच्छा, क्या पढ़ रहे हो?"

बेटा–"फिल्म की कहानी।"

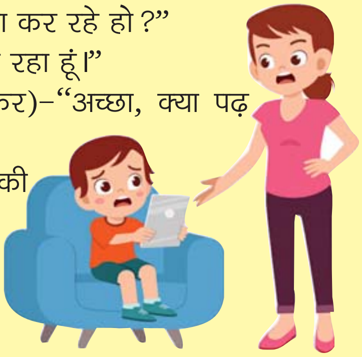

पप्पू–"ये ट्रेन चल क्यों नहीं रही?"

टीटी–"अरे भारी वर्षा की वजह से ट्रेन लेट है।"

पप्पू–"वर्षा इतनी भारी है, तो वर्षा को ट्रेन से उतार क्यों नहीं देते?"

एक महाकंजूस पति अपनी पत्नी के साथ कहीं घूमने गया।
पत्नी–"सुनो जी, मुझे प्यास लगी है। पानी की एक बोतल ले दीजिए"
पति–"दही कचौरी खाएगी क्या...?"
पत्नी–"एजी, ऐसे मत बोलिए, मेरे तो मुंह में पानी आ गया।"
पति–"बस, तो उसी पानी को पी ले। पानी की एक बोतल खरीदने की क्या जरूरत है...!"

दो चिड़ियां आकाश में उड़ रही थीं। तभी एक जेट विमान धुआं छोड़ता हुआ तेजी से उनसे आगे निकला। एक चिड़िया हैरान होकर बोली–"यह चिड़िया तो बड़ी जल्दी में थी।"

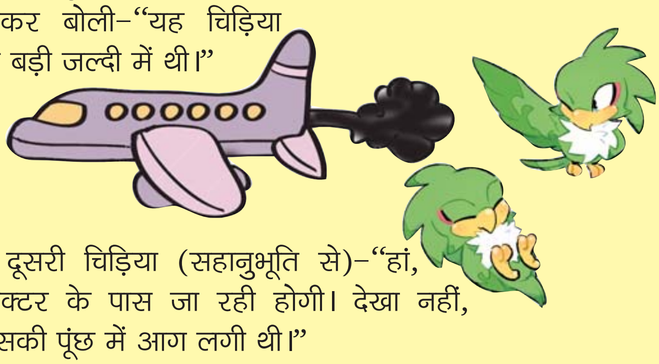

दूसरी चिड़िया (सहानुभूति से)–"हां, डाक्टर के पास जा रही होगी। देखा नहीं, उसकी पूंछ में आग लगी थी।"

जंगल से सबक

बहुत समय पहले एक गांव में हट्टा-कट्टा लकड़हारा रहता था। एक दिन वह जंगल में लकड़ी काटने के लिए गया। वह लकड़ी काट ही रहा था कि थोड़ी देर बाद वह चौंक पड़ा। अचानक उसने देखा कि बेख्याली में लकड़ी काटते-काटते उसने पूरा जंगल ही साफ कर दिया था। दूर- दूर तक कहीं भी पेड़-पौधों का नामो-निशान ही नहीं था। हर तरफ कटे वृक्ष, और फूल-पत्ते ही बिखरे हुए दिख रहे थे।

उस दिन धूप बहुत तेज थी। लकड़हारा प्यास और धूप से बहुत परेशान हो गया। एक समय ऐसा आया कि उसे लगा, अब तो प्राण ही निकल जाएंगे। चिलचिलाती धूप और उमस से वह बेहद निढ़ाल हो गया। अब उसे हर तरफ कटे जंगल का ही नजारा उसे दिख रहा था।

जब स्थिति बर्दाश्त से बाहर हो गई, तो वह बड़बड़ाने लगा, मुझे बहुत गरमी लग रही है क्या करूं? ना यहां पानी की सुविधा है और न ही छांव की कोई उम्मीद! यह सब मेरा ही किया धरा है। अपनी करनी का ही अब फल भुगत रहा हूं।

काफी देर तक वह परेशान रहा और आखिर में जब उसे लगने लगा कि अब उसके प्राण निकलने वाले हैं, तभी अचानक कटे पेड़ों के बीच से एक आवाज आई, "लकड़हारा भइया! अभी मेरे पत्तों में थोड़ी सी जान बाकी है आप चाहो, तो मेरे इन पत्तों को उठाकर अपने शरीर को ढांप लीजिए। इससे आपको छांव और ठंडक मिल जाएगी। शायद आपके प्राण भी बच जाएं।"

इतना सुनते ही उसने पीछे पलटकर देखा। वह आवाज उन कटे हुए पेड़ों के पत्तों से आ रही थी। उसने सोचा, 'मैंने तो इन्हें काट दिया था। फिर भी यह हमारे लिए इतनी बड़ी बात कर रहे

हैं! उन्हें मेरी फिक्र है।"

गरमी से बचने के लिए उसने उन पत्तों से ही अपने शरीर को ढक लिया और जब तक शाम नहीं हुई और सूरज नहीं डूबा, तब तक उन पत्तों से अपने शरीर को ढ़के बैठा रहा। इससे उसे बहुत राहत मिली और उसके प्राण बच गए।

इसके बाद उसे अपनी गलती का अहसास हो गया और उसकी आंखों से आंसू बह निकले। वह उन कटे पत्तों से बोला, "मैंने तुम्हारे पेड़ काट डाले और सारा जंगल भी तहस-नहस कर दिया। फिर भी तुमने मुझे जीवन दान दिया। मुझे माफ कर दो। मैं प्रकृति का एक बड़ा गुनहगार हूं। मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया है।"

तब उन पत्तों ने कहा, "यदि वास्तव में तुम पश्चात्ताप करना चाहते हो, तो इस जंगल को फिर से हरा-भरा करने का प्रयास करो।"

वह लकड़हारा उदास मन से घर लौट गया। वह साथ में लकड़ियां भी नहीं ले गया। वह रात भर चारपाई पर बैठा सोचता रहा कि जंगल को कैसे हरा-भरा किया जाए। आखिर उसे उपाय सूझ गया।

सुबह उठकर उसने बाजार से छोटे-छोटे ढेर सारे पौधे लिए और चल पड़ा, उसी जंगल की ओर, जहां उसने पूरा जंगल नष्ट कर डाला था। वहां पहुंचकर उसने जमीन में छोटे-छोटे पौधे लगाए। फिर नदी से लाकर उनमें पानी डाला। फिर संतुष्ट होकर घर लौट गया। उस रात वह चैन की नींद सोया।

यह उसका अब नियम बन गया। इस प्रकार वह रोज उसमें पानी डालता। सुबह से शाम उनकी रखवाली करता। फिर रात गए घर लौटता। इस प्रकार जब तक वह पेड़ बड़े नहीं हो गए, तब तक वह उनकी खूब सेवा करता रहा। फिर एक समय ऐसा भी आया जब जंगल फिर से आबाद हो गया।

इस प्रकार लकड़हारे का पश्चात्ताप भी पूरा हो गया और उसे भरपूर खुशी भी हुई कि उसने जंगल को फिर से हरा-भरा कर दिया। इसके बाद उसने प्रण लिया, "आज के बाद मैं कभी भी किसी को इस जंगल से कोई भी वृक्ष नहीं काटने दूंगा। लोगो को इस बात के लिए प्रेरित करूंगा कि हमेशा पेड़ पौधे लगाए जाएं।"

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

सुशील दोषी : चित्रकला के साथ बाल साहित्य में भी विशेष रुचि। पेशे से एक कार्टूनिस्ट। पोस्ट ग्रेजुएशन के साथ ही आर्ट्स कॉलेज के विद्यार्थी भी रह चुके हैं। नवभारत टाइम्स में बतौर सीनियर डिजाइनर के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। उनका इस कहानी को लिखने का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। उनका मानना है कि इस पृथ्वी पर पर्यावरण संतुलन लगातार बिगड़ रहा है और इस असंतुलन को सिर्फ मानव ही ठीक कर सकता है।

पहेली कहानी

इस कहानी में 11 देवी देवता और उनके वाहन के नाम दिए गए हैं। आपको उन्हें खोज कर उनका सही जोड़ा बनाकर बताना है।

लक्ष्मी दत्त और उसके दोस्त इंद्रदेव को घूमने फिरने का बहुत शौक था। वे प्रायः जंगल में चले जाते और वहां शेर, बाघ, हाथी, हिरण, खरगोश को देखते। जंगल के बीच में शिवजी का मंदिर था, जिसमें पार्वती, गणेश और कार्तिकेय की मूर्तियां भी थीं। वे उनके दर्शन करके पूजा करते। वहां उन्हें अनेक प्रकार के पक्षी भी दिखाई देते, जैसे मोर, तोता, हंस, गरुड़ आदि। कभी-कभी रात को उल्लू भी चूहे का शिकार करते नजर आ जाते। जंगल से लौटने पर दोनों दोस्त अपनी पत्नियों सरस्वती और दुर्गा के लिए जंगल के विशेष मीठे फल लेकर आते।

लक्ष्मी दत्त ने गाय, भैंस, बैल, भैंसा, बकरी आदि पशु पाल रखे थे जिनकी देखभाल विष्णु करता था।

एक बार इंद्रदेव काम से शहर गया तो वहां के राज डिपो से पशुपालन के सरकारी नियम की किताब लाया और अपने दोस्त लक्ष्मी दत्त को दी। लक्ष्मी दत्त यह उपहार पाकर बहुत खुश हुआ।

प्रकाश तातेड़ उदयपुर

शब्द बनाओ

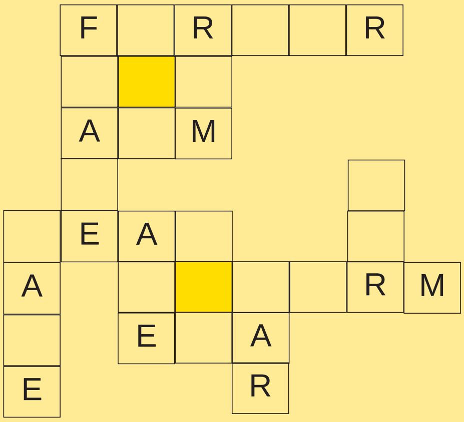

R A R E M F

अक्ल लगाओ

$$A + E + F - D = 8$$

$$L + B + C \times A = 17$$

$$N - B + D + ? = 20$$

तीन सवाल : एक जवाब

1. इस बल्लेबाज का नाम बताओ–

क. वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में दो दोहरे शतक लगाने वाले एकमात्र बल्लेबाज।

ख. वनडे इंटरनेशनल में एक इनिंग्स में सबसे ज्यादा रन बनाने के रेकॉर्ड इनके नाम है।

ग. 6 बार आईपीएल टूर्नामेंट जीतने वाले एकमात्र खिलाड़ी

2. इस खिलाड़ी का नाम बताओ–

क. अपने पहले ही विश्व कप क्रिकेट मैच में इन्होंने शतक लगाया।

ख. ऑस्ट्रेलिया में एक टेस्ट सीरीज में चार शतक लगाने वाले एकमात्र भारतीय खिलाड़ी।

ग. अंडर 19 क्रिकेट विश्वकप जीतने वाली टीम के कप्तान थे।

3. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ–

क. टेस्ट मैचों में सबसे ज्यादा शतक इन्होंने लगाया है।

ख. अपने छठे विश्वकप में भाग लेते हुए विश्वकप जीता।

ग. एकमात्र खिलाड़ी, जिन्हें भारत रत्न दिया गया।

4. इस क्रिकेट खिलाड़ी को पहचानो–

क. इन्होंने 20-20 विश्वकप के एक मैच में 6 गेंदों पर 6 छक्के लगाए थे।

ख. 2011 के वनडे विश्वकप में यह 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' थे।

ग. इनके पिता भी भारत के लिए टेस्ट मैच खेल चुके हैं।

5. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ–

क. टेस्ट क्रिकेट में इन्होंने दो तिहरे शतक लगाए हैं।

ख. दिल्ली के लिए रणजी ट्राफी खेलते थे।

ग. इन्हें मुल्तान का सुल्तान भी कहते हैं।

6. इस क्रिकेट खिलाड़ी का नाम बताओ–

क. टेस्ट में एक इनिंग्स में दस विकेट लेने वाले एकमात्र भारतीय।

ख. भारत के लिए सबसे ज्यादा टेस्ट विकेट लिए।

ग. भारतीय क्रिकेट टीम के कोच भी बने।

सही चित्र मिलाओ : खिलाड़ी के चित्र से उसके सही खेल के चित्र को मिलाओ

1.

8.

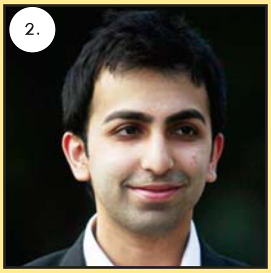
2.

4.

3.

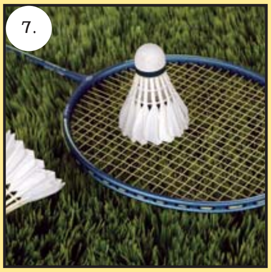
7.

4.

3.

5.

6.

6.

2.

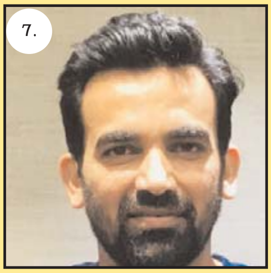
7.

5.

8.

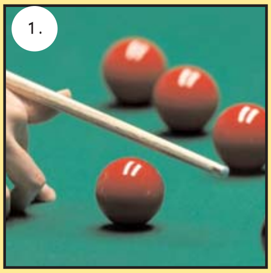
1.

उत्तर

कहानी पहेली

लक्ष्मी - उल्लू
इंद्र - हाथी
शिव - बैल
पार्वती - बाघ
कार्तिकेय- मोर
गणेश - चूहा

विष्णु - गरुड़
सरस्वती - हंस
दुर्गा - शेर
कामदेव - तोता
यमराज - भैंसा

शब्द बनाओ

	F	A	R	M	E	R	
	R		A				
	A	R	M				
	M					E	
F	E	A	R			A	
A		R		F	A	R	M
M		E	R	A			
E				R			

अक्ल लगाओ

यदि A को 1 , B को 2 मानते हुए गिनती करें तो उत्तर D आएगा।

N=14,B=2,D=4

14-2+4+4=20

तीन सवाल : एक जवाब

1. रोहित शर्मा, 2. विराट कोहली, 3. सचिन तेंदुलकर, 4. युवराज सिंह, 5. वीरेंद्र सहवाग, 6. अनिल कुंबले

सही चित्र मिलाओ

खिलाड़ी	खेल
1. मेजर ध्यानचंद	3. हॉकी
2. पंकज आडवाणी	1. स्नूकर
3. डेविड बेखम	5 फुटबॉल
4. मैरी कॉम	8. बॉक्सिंग
5. ज्वाला गुट्टा	7. बैडमिंटन
6. पीट सैम्प्रास	4. टेनिस
7. जहीर खान	2. क्रिकेट
8. सुशील कुमार	6. कुश्ती

राइजिंग स्टार

अन्वी घिल्डियाल

कोमल मन के सपने अनेक

जिस उम्र में बच्चे अपने माता-पिता की गोद में बैठ अपनी जिद पूरी करवाने की जुगत में रहते हैं, उस उम्र में दिल्ली की प्यारी सी अन्वी घिल्डियाल आत्मविश्वास से भरपूर है। वह अभी महज 4 साल की है, लेकिन मॉडलिंग जगत में बतौर प्रोफशनल मॉडल स्थापित हो चुकी है।

चाइल्ड आर्टिस्ट के साथ शूट में अक्सर अधिक समय लगता है। शूट के दौरान जहां दूसरे आर्टिस्ट एक-दो रीटेक के बाद सुस्त पड़ने लगते हैं, वहीं कई बार अन्वी खुद फोटोग्राफर को पोज सुझाती हैं।

अन्वी का जन्म ऐसे क्रांतिकारी डिजिटल दौर में हुआ है, जहां 100 मैगापिक्सल कैमरा मोबाइल में होना सामान्य बात है। जब ठीक से बोलना भी नहीं आता था, तब से अन्वी के चेहरे की मुसकान किसी को भी उसकी फोटो क्लिक करने पर मजबूर कर देती थी।

आंखों को गोल-गोल घुमाते हुए अन्वी खुद बताती है, "पिछले साल एक दिन पापा ने कहा कि चलो, घूमने चलते हैं। जहां हम गए थे, वहां कोई फोटो शूट चल रहा था। मुझे नहीं पता था कि अगली मॉडल मैं हूं। बड़ी-बड़ी लाइट्स मैंने पहली बार देखी थी। पापा ने बस एक बार पूछा, डरोगी तो नहीं। मैंने अपना सिर ना में हिलाया। उस दिन मुझे बहुत मजा आया। मुझे मेरी पसंद की ड्रेस पहनाई गई। ऐसा लगा मानो जैसे मेरा बथडे है।"

एक साल में अन्वी में गजब का आत्मविश्वास आया है। बहुत अनुभवी मॉडल के साथ शूट हो या अपने जैसे किसी हमउम्र मॉडल के साथ, वह झट से घुलमिल जाती है। अन्वी, कैमरा शटर की आवाज से खुद बखुद पोज बदलने लगती है।

अन्वी खूबसूरत, फोटोजनिक, एक्सप्रेसिव है। वह खुद अपने अलग-अलग मूड्स दिखाती है। आज अन्वी आईस्टॉक और गैटी इमेज के लिए कॉन्सेप्ट शूट में व्यस्त रहती है। हाल ही में अन्वी एक बड़े बैनर की बॉलीवुड फिल्म के ऑडिशन में दूसरे राउंड तक पहुंची। उसके स्वाभाविक एक्टिंग के कारण वह दिन दूर नहीं, जब वह जल्द छोटे-बड़े पर्दे में दिखाई भी देने लगे।

अन्वी की मां दीपा का कहना है कि मुम्बई से इसके लिए लगातार ऑफर आ रहे हैं, लेकिन हम इससे इसका बचपन नहीं छीनना चाहते। अभी वह सिर्फ प्रीस्कूल में है। मजे-मजे में वह जितना कर ले, हम उससे उतना ही करवा रहे हैं।

अन्वी को एक्टिंग के अलावा डांस और गाना गाना बेहद पसंद है। किसी स्टेप को एक बार देख कर वह उसे आसानी से दोहरा लेती है।

अन्वी कई बार उदास होकर खुद से बात करती है, "इसी साल तो मेरा स्कूल में एडमिशन हुआ था और कोरोना को भी इसी साल आना था। न मैं स्कूल जा सकी और न ही भैया ने जैसे बताया था कि वह बहुत मस्ती करते हैं झूले, एक्टीविटी क्लास, कुछ भी नहीं हुआ।"

अन्वी चाहती है कि वह ऑनलाइन क्लास के जरिए नहीं, स्कूल के स्टेज में जाकर परफॉरमेंस दे।

राइजिंग स्टार

रावतभाटा की उभरती बाल प्रतिभा

लिली यादव

कुछ भी बेकार नहीं होता

लिली यादव ने अपने पापा द्वारा डस्टबिन में फेंक दिए वाशिंग पाउडर के खाली कार्टन का सदुपयोग कर, क्राफ्ट पेपर, टेप फेविकोल स्केच पेन की सहायता से toy box टॉय बॉक्स बनाकर अपनी मौलिक प्रतिभा का एक अनूठा प्रयोग कर, एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। चलिए, उसी के शब्दों में उसकी कहानी पढ़ते हैं।

मेरा नाम लिली यादव है। 15 जनवरी 2021 को मै 7 वर्ष की हो गई। मैं परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय नंबर 3, रावतभाटा में कक्षा 2 में पढ़ती हूं।

मम्मी सुबह की बची हुई दाल से शाम को परांठे बना देती हैं। नानाजी दिलीप भाटिया पुराने पेन में नई रिफिल डालकर उपयोग में लेते हैं। अपने पुराने कपड़े गरीबों को पहनने के लिए देते रहते हैं। घर में चाय, वाशिंग पाउडर इत्यादि के कार्टन डिब्बे डस्टबिन में डाल दिए जाते हैं।

यह देखकर मेरे मन में विचार आया कि इनके लेबल, फोटो, विज्ञापन, कीमत इत्यादि को छुपाकर मैं सुंदर बॉक्स बना सकती हूं। बस, किसी को पता नहीं चले कि यह चाय अथवा वाशिंग पाउडर का डिब्बा है।

पहले रेड लेबल चाय के डिब्बे से नानाजी के पेन रखने के लिए सुंदर सा बॉक्स बनाया। फिर सर्फ पाउडर के डिब्बे से टॉय बॉक्स बनाया, जिसकी फोटो भेज रही हूं।

मैंने अलग-अलग रंग के क्राफ्ट पेपर डिब्बे के चारों तरफ कैंची से काटकर टेप और फेविकोल से चिपका दिए। स्केच पेन से अपना नाम और टॉय बॉक्स लिख दिया। किसी को पता भी नहीं लगता कि यह सर्फ का डिब्बा है। पुरानी कई वस्तुओं का उपयोग करना संभव है, इस टॉय बॉक्स से मैंने यही संदेश देने का प्रयास किया है।

अभी स्कूल बंद हैं। स्कूल खुलने पर प्रिंसिपल मैडम परमिशन देंगी, तो सभी स्टूडेंट्स के सामने बनाकर दिखाऊंगी।

वीडियो देखने के लिए पायस के यू ट्यूब चैनल पर जाएं
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg

प्रथम पुरस्कार

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है,दीप्ति मित्तल ने

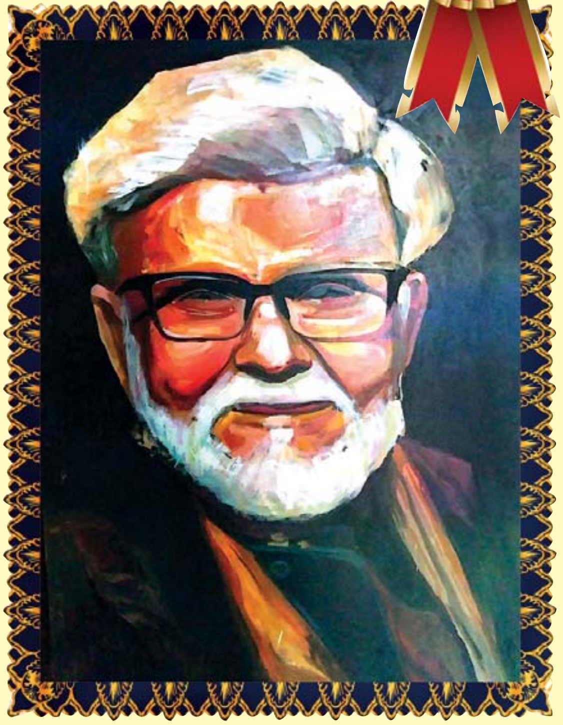

प्रियांशु गर्ग

आन्या

कुनिका कौशिक

प्रियांशु गर्ग
उम्र : 13 वर्ष,
कक्षा : नौ,
तिलक पब्लिक स्कूल
जयपुर

आन्या,
उम्र : 8 वर्ष,
कक्षा : तीन,
सेठ एम. आर. जयपुरिया स्कूल, लखनऊ

कुनिका कौशिक,
उम्र : 6 वर्ष,
कक्षा : एक,
केन्द्रीय विद्यालय,
बीकानेर

पारुल वॉग

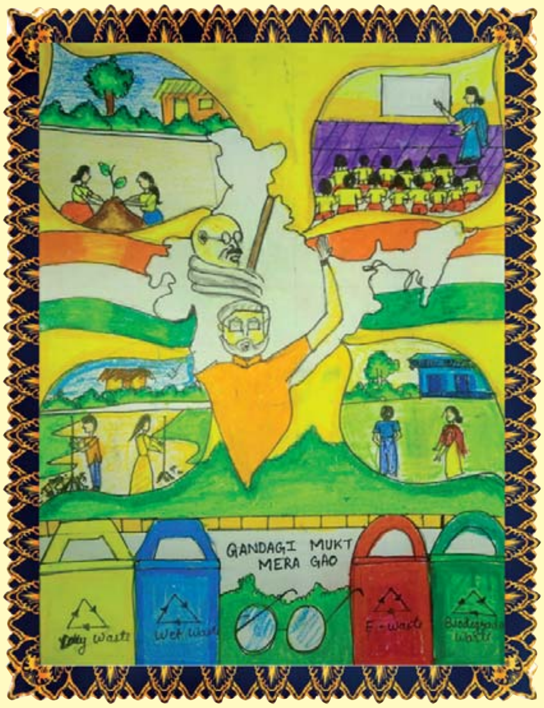

आर्या सतीश भोयर

सान्वी

पारुल वॉग,
उम्र : 14वर्ष,
कक्षा : नौ,
क्राइस्ट चर्च गर्ल्स सी. से. स्कूल, जबलपुर

आर्या सतीश भोयर,
उम्र : 11 वर्ष,
कक्षा : छह, डी.ए.वी पब्लिक स्कूल
झारसुगुड़ा, ओडिसा

सान्वी,
उम्र : 5 वर्ष,
कक्षा : यू केजी,
सेठ एम. आर. जयपुरिया स्कूल, लखनऊ

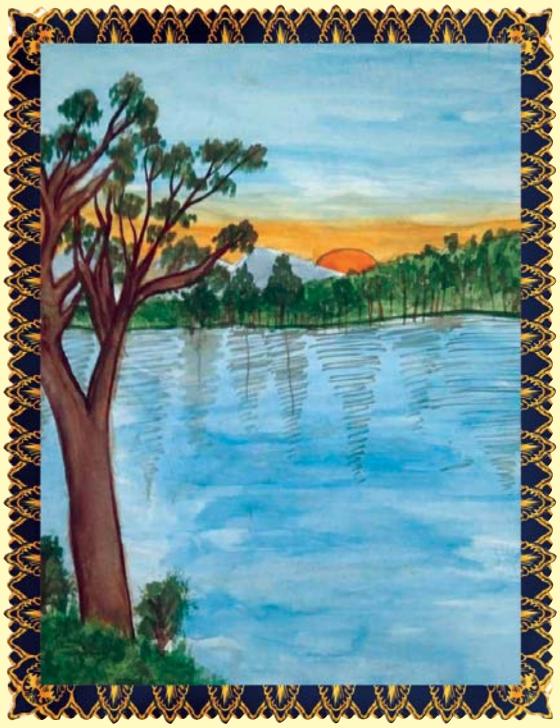

सिद्धी भंडारी,

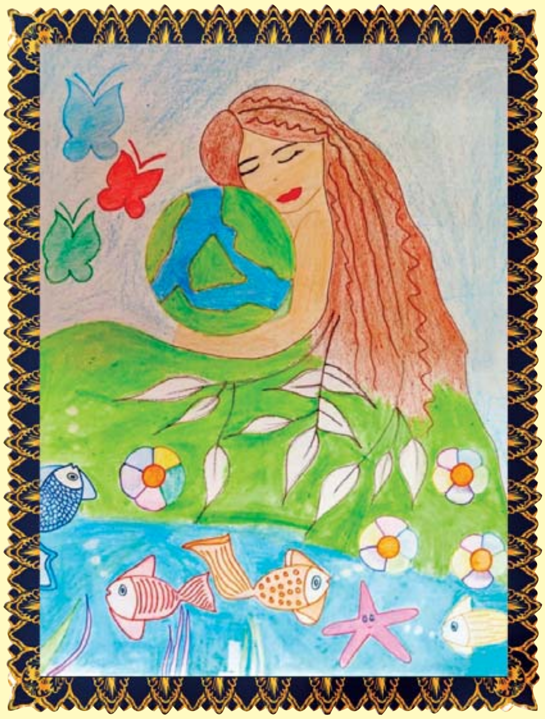

पर्व जैन

आरजू गुप्ता

सिद्धी भंडारी,
उम्र : 13 वर्ष,
कक्षा : सात,
एन मैरी स्कूल,
देहरादून

पर्व जैन
उम्र : 12 वर्ष,
कक्षा : सात,
मिस्पा मिशन स्कूल,
सिरोहा , जबलपुर

आरजू गुप्ता
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा : पांच,
सालेम हा. से. स्कूल,
सिहोरा, जबलपुर

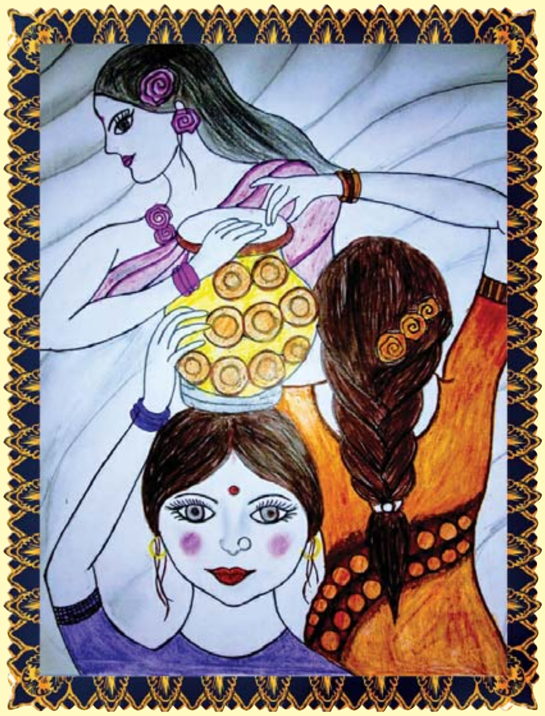

पावनी गुप्ता

शाम्भवी गुप्ता

आकृति शुक्ला

पावनी गुप्ता,
उम्र : 13 वर्ष,
कक्षा : आठ,
सालेम हा. से. स्कूल,
सिहोरा, जबलपुर

शाम्भवी गुप्ता,
उम्र : 9 वर्ष,
कक्षा : 4,
विद्या भवन पब्लिक स्कूल, इंदौर,

आकृति शुक्ला
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा : पांच,
डी.ए.वी पब्लिक स्कूल,
लुधियाना

नटखट बच्चा

एक नट्खट बच्चा था, चिंटू। वह बस एक साल का था, पर उसको बोलना, क्रॉल करना और चीजों को पकड़ना भी आता था। फिर एक दिन उसने सोचा कि वह गांव में थोड़ी देर के लिए घूमने जाए।

जब उसकी मम्मी सो गई, तो वह क्रॉल करते-करते घर से बाहर निकला। बाहर उसने पहाड़ देखे, पेड़ देखे और सुंदर पक्षी उड़ते देखे। एक पक्षी जब उसके सिर पर बैठकर चिर्प चिर्प करने लगा, तो उसे बहुत मजा आया। जब वह क्रॉल करते-करते थक गया, तो उसने खिलौनों की एक दुकान देखी। चिंटू दुकान के अंदर गया और बहुत खुश हुआ।

"आप यहां क्या कर रहे हो ?" दुकानदार ने चिंटू से पूछा ।

"मैं यहां एक बेबी वॉकर खरीदने आया हूं।" चिंटू ने कहा।

दुकानदार ने पूछा, "तुम्हारे मम्मी-पापा कहां हैं ?"

चिंटू ने कहा, "अरे भैया, ये लो पैसा और बस एक वॉकर दे दो। आज मुझे सारा गांव घूमने जाना है।" जैसे ही दुकानदार ने वॉकर दिया, चिंटू लपककर वॉकर में जा बैठा और घूमने निकल पड़ा।

रास्ते में चिंटू ने सोचा, 'आज घूमने निकला ही हूं, तो क्यों न राजा के सिंहासन पर बैठने का मजा भी ले लूं? कितना सुंदर और नरम लगता है वह दिखने में।'

जब चिंटू राजमहल पहुंचा और उसने राजा से कहा कि वह सिंहासन पर बैठना चाहता है। सुनकर राजा ने गुस्सा से अपने सैनिकों को चिंटू को पकड़ने का आदेश दिया।

अब चिंटू घबरा गया और जल्दी-जल्दी कोई उपाय ढूंढने लगा। तभी चिंटू की नजर पड़ी अपने वॉकर के 'सुपर फास्ट स्पीड मोड बटन' पर। उसने बटन दबाया और जूम जूम जूम करता राजमहल से बहार निकल आया ।

चिंटू वॉकर से घर के पास पहुंचा और चैन की सांस ली। उसने सोचा कि जब मम्मी को अपनी यह साहसी कहानी बताऊंगा, तो मम्मी कितनी खुश होगी। लेकिन यह क्या, मम्मी तो नाराज हो गईं।

चिंटू बोला, "अच्छा अच्छा सॉरी ! अगली बार ऐसा नहीं करूंगा। वह चुपचाप रात को खाना खाकर सो गया । जब वह सुबह उठा, तो देखा कि घर में सब लोग सो रहे थे और घर का दरवाजा भी खुला था। दरवाज़े के पास ही था 'सुपर फास्ट स्पीड मोड बटन'वाला वॉकर। उसने सोचा, 'तो अब इस बा , किधर?'

अक्षज भरद्वाज

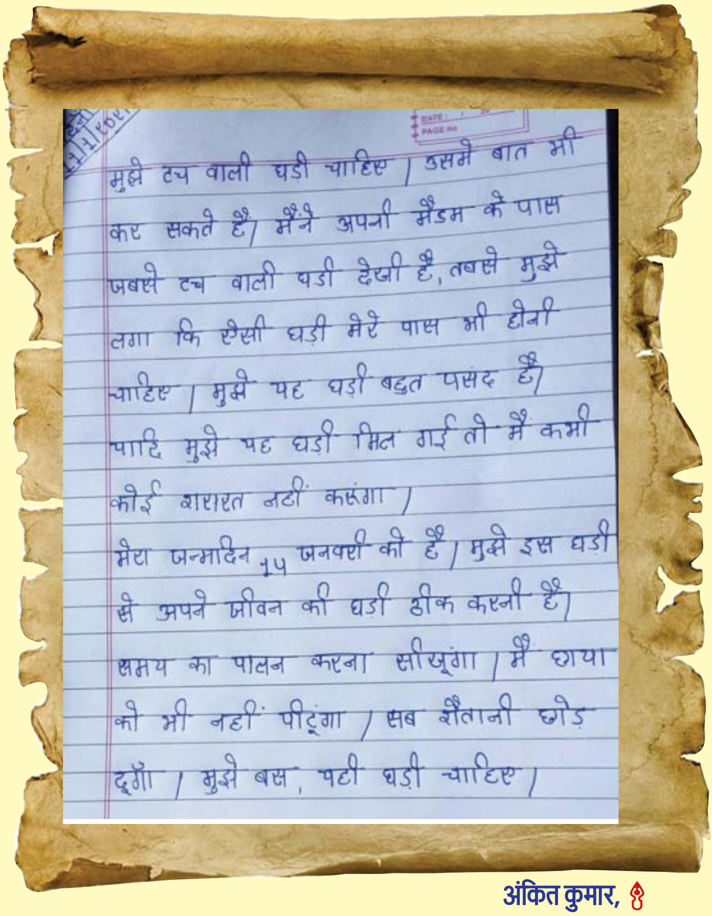

मुझे टच वाली घड़ी चाहिए। उसमें बात भी कर सकते हैं। मैंने अपनी मैडम के पास जबसे टच वाली घड़ी देखी है, तबसे मुझे लगा कि ऐसी घड़ी मेरे पास भी होनी चाहिए। मुझे यह घड़ी बहुत पसंद है। यदि मुझे यह घड़ी मिल गई तो मैं कभी कोई शरारत नहीं करूंगा।

मेरा जन्मदिन 15 जनवरी को है। मुझे इस घड़ी से अपने जीवन की घड़ी ठीक करनी है। समय का पालन करना सीखूंगा। मैं छाया को भी नहीं पीटूंगा। सब शैतानी छोड़ दूंगा। मुझे बस, यही घड़ी चाहिए।

अंकित कुमार,

अक्षज भारद्वाज,
उम्र : 8 वर्ष,
कक्षा :तीन,
एमिटी इंटरनेशनल,
एम्सटेंवील, नीदरलैंड्स

अंकित कुमार,
उम्र : 9 वर्ष,
कक्षा : तीन, जगमोहन शिशु मंदिर पब्लिक स्कूल, चंदौसी (उ.प्र.)

मस्त कलंदर

चले रौब से बंदर मामा
लगा फैन्सी चश्मा।
जीरो से हीरो बनने का
चढ़ा था पूरा चस्का ।

टोपी-जूता पहन के सुंदर
पहुँचे जंतर मंतर।
शुरू किया फिर अपना ड्रामा
बनकर मस्त कलंदर ।

देख के उनका सारा ड्रामा
मचा बहुत हंगामा।
डर कर भागे बंदर मामा
खिस्का था पाजामा।

दयाना ग्रोवर

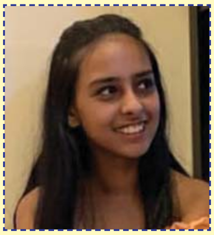

दयाना ग्रोवर,
उम्र : 12 वर्ष,
कक्षा : सात,
दिल्ली पब्लिक स्कूल,
नोएडा, (उ.प्र.)

बबलू का सपना

बबलू सो रहा था। उसकी मम्मी आईं और उससे बोलीं, "उठ जा बबलू!"

बबलू अपने सपने में मस्त था। वह उठा ही नहीं। वह सपने में देख रहा था कि वह चॉकलेट और टॉफियों के जंगल में है। उसके आसपास टॉफी और चॉकलेट के बहुत सारे पेड़ हैं और वह जिस पेड़ से चाह रहा है, टॉफी-चॉकलेट तोड़कर खा रहा है।

वह मन ही मन बेहद खुश था कि तभी उसकी आंखों पर बहुत जोर की रोशनी पड़ी। कोई उसके कानों में फुसफुसाया, "तुम इतनी देर से सो रहे

हो। अब उठ जाओ। सुबह हो चुकी है।"

यह सूर्यदेव थे। बबलू ने सूर्यदेव की बात नहीं मानी और अपनी चॉकलेट खाता रहा। सूर्य देव क्रोधित हो गए। वह बबलू से बोले, "अब उठ जाओ। सुबह हुए बहुत देर हो चुकी है। अब अगर सोते रहे तो मैं तुम्हें शाप दे दूंगा। तुम टॉफी के पेड़ बनकर रह जाओगे।"

बबलू डर गया। उसने सोचा, "अरे बाप! टॉफी का पेड़...। मैं तो बबलू ही ठीक हूं। अब उठना ही बेहतर होगा।"

और बबलू उठ गया। सूर्यदेव आसमान में खड़े मुसकरा रहे थे।

आराध्य गौरव

आराध्य गौरव
उम्र : 7 वर्ष,
कक्षा : एक, सेंट जेवियर्स सीनियर सेकंडरी स्कूल,
बलरामपुर (उ.प्र.)

अरमान

कि आज फिर से आंखो में एक नया अरमान जागा है,
आज फिर से मन उस परिंदे के पीछे भागा है!
दिल ने मुस्कुराते हुए कहा,
ये तो तेरी सपनो की डोर से निकला हुआ एक धागा है
कि टूटने मत देना, कभी अपने सपनो की डोर को,
मिल जाएगी तुम्हे अपनी मंजिल
जिस तरह मिली चांदनी चकोर को
आखिर सपनो से ही तो जीवन सजता है
सपनो से ही तो हमें अपना मुकाम मिलता है।
कि मेरा भी एक सपना है,
पर अपनी मंजिल से अनजान हूं
पीछे ना हटाऊंगी अपने कदम
अपने सपनो के लिए में कुर्बान हूं
सपने तो जीवन में सोने पर सुहागा है!
आज फिर से आंखों में एक नया अरमान जागा है!

काजल धारीवाल

किताबें

मैंने पढ़ा है
किताबों में बहुत ज्ञान भरा पड़ा हैं,
और मां कहती है
किताबों को खुला नहीं रखते,
सारा ज्ञान उड़ जाएगा।

अब मां को कौन समझाए
पढ़ने से ही सारा ज्ञान बुद्धि में आएगा,
बिन पढ़े तो कुछ समझ नहीं आएगा।

खुली किताब से ज्ञान जीवन में भर जाएगा
ये उड़ेगा नहीं कहीं भी, बस
इक सही राह दिखाएगा।

अयाति ओझा

काजल धारीवाल,
उम्र :12 वर्ष,
कक्षा : 8, शासकीय पद्मा कन्या राजे उ. मा. विद्यालय, ग्वालियर

अयाति ओझा,
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा : पांच,
स्कूल : रूट्स टू हिन्दी, शिकागो, यू एस ए

गीत पहेली

मैं न मानती हार

तीन ओर से शत्रु खड़े हैं
बने हुए तलवार।

पीछे कभी-कभी ही हटती,
हो कितना भी काम।
जब-तब लड़ना ही होता है,
मुझको तो संग्राम।
छुट्टी नहीं एक दिन की भी,
हो कोई भी वार।

मुँह से ध्वनि निकालने में मैं,
करती हूँ सहयोग।
दाँतों संग सफ़ाई मेरी,
करें रोज़ सब लोग।
दाँत सभी झड़ जाते, लेकिन
मैं न मानती हार।

अगर चिढ़ाना हो दूजे को,
आती हूँ मैं काम।
दौड़ाओ मस्तिष्क, बताओ
जल्दी मेरा नाम।
भोजन जो करते हो, उस पर
मैं लपेटती लार।

अनुपम 'अनुज'

तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी
तुम्हारी है एक बड़ी कहानी,
छोटे अंडे से लार्वा बनती
फिर लार्वा से बन जाती प्यूपा
प्यूपा से फिर तितली,
कितना सुंदर है जीवन-चक्र तुम्हारा
रंग-बिरंगे पंखों वाली,
तितली रानी, तितली रानी
चुप क्यों बैठी हो
कुछ तो बोलो
हरदम उड़ने वाली
तितली रानी, तितली रानी।

आयुष्मान पात्रो

द्वितीय पुरस्कार

(पहेली गीत का उत्तर इसके साथ दिए चित्र में छिपा है।)

अनुपम 'अनुज'
उम्र : 13 वर्ष
कक्षा : आठ
के. बी. राय अकादमी,
गोरखपुर (उ.प्र.)

आयुष्मान पात्रो
उम्र : 10 वर्ष
कक्षा : पांच
स्कूल : रूट्स टू हिन्दी,
शिकागो, यू एस ए

पुस्तक परिचय

पुस्तक : उड़ने वाले जूते
लेखक : डॉ. विमला भंडारी
प्रकाशक : सहित्यागार, जयपुर
फोन : 0141-2310785
ईमेल : sahityagar@gmail.com
मूल्य : 200 रुपए

बच्चों के लिए लिखी किताब की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह बच्चों के दिलो-दिमाग पर कितनी गहरी छाप छोड़ती है। कोई पुस्तक हर वर्ग के पाठक को रुचिकर लगे, उन्हें गुदगुदाए और पुस्तक को एक ही बार में पढ़ने को विवश कर दे, तो इसका अर्थ है कि उस पुस्तक ने बाल-साहित्य में तो अपनी एक जगह बना ही ली है।

'उड़ने वाले जूते' ऐसी ही एक पुस्तक है जिसमें 17 कहानियां संकलित हैं। इसका शीर्षक भी जिज्ञासा पैदा करता है कि क्या किसी नए आविष्कार की बात तो नहीं की जा रही है, लेकिन जब रहस्य खुलता है तो हंसी रोके नहीं रुकती है।

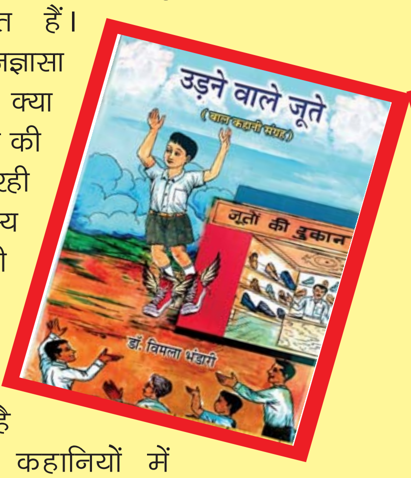

इस कहानी संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें निहित कहानियों में विविधता है। हर कहानी के कथानक और प्रस्तुतिकरण में एक नवीनता है। लेखिका ने कहानी के मूल ध्येय यानी मनोरंजन का पूरा ख्याल रखते हुए बिना थोपे हुए बहुत ही सहज ढंग से बच्चों तक संदेश पहुंचाएं हैं। लेकिन पढ़ते वक्त यह नहीं लगता कि उपदेश दिए जा रहे हैं।

इस कहानी संग्रह की भाषा अत्यंत सहज और सरल है और प्रवाह कहीं पर भी बाधित नहीं होता है। निस्संदेह यह एक पठनीय कहानी संग्रह है। हर कहानी समतल जमीन पर पानी की तरह बहती हुई लगती है। मैं यकीन से कह सकती हूं कि किसी भी कहानी को पढ़ते हुए पाठक को निराशा नहीं होगी, वरन एक उत्साह उसके अंदर ऊर्जित होगा। इसका आवरण और चित्र भी कहानियों के अनुरूप हैं और कहानियों की जीवंतता बनाए रखने में मदद करते हैं।

समीक्षक : सुमन बाजपेयी

पुस्तक : डस्टबिन में पेड़
लेखक : आशा शर्मा
प्रकाशक : विकास प्रकाशन, बीकानेर (राज)
फोन : 9413210888
ईमेल : vikasprakashanbkn@gmail.com
मूल्य : 250 रुपए

राजस्थान साहित्य अकादमी के शंभू दयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार से अलंकृत आशा शर्मा का अभी-अभी दूसरा बाल कहानी संग्रह आया है 'डस्टबिन में पेड़', जिसमें छोटी-बड़ी चौबीस कहानियां संकलित हैं।

पेशे से इंजीनियर और साहित्य साधना में लीन आशा जी की इस 'कृति में वे सब इंद्रधनुषी रंग विद्यमान हैं, जो बच्चों के मानसिक विकास और चरित्र निर्माण के लिए जरूरी हो सकते हैं। पशु-पक्षियों की दुनिया, सामुदायिक परिवेश, पारिवारिक जुड़ाव, ऐतिहासिक घटनाएं, संस्कारों का बीजारोपण, साथ ही पठन-पाठन का अनुभूत आनंद।

संग्रह की लगभग सभी कहानियां अच्छी हैं। उनके कथानक तो अद्भुत हैं ही, पात्र और संवाद भी प्रभावित करते हैं। उनमें 'चोंच डाउन हड़ताल', 'पानी का लोन', 'इलेक्ट्रोनिक रैकेट', 'छई छप छई',' 'पुस्तकों से दोस्ती', 'इलेक्ट्रोनिक रैकेट', 'हवा की जिद', 'असली सुंदरता', 'इचकी और मिचकू' जैसे नाम लिए जा सकते हैं।

आशा शर्मा का यह बाल कहानी संग्रह जितना बाल जीवन की सच्चाई से रु-ब-रु कराता है उतना ही कल्पना लोक की सैर भी कराता चलता है। यही नहीं, सहज-सरल शब्दावली के साथ-साथ कहीं-कहीं आंचलिक और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी इन कहानियों को बोधगम्य बना जाता है। सुंदर-सटीक आवरण और मोहक कलेवर में संजोई गई 'डस्टबिन में पेड़' की बाल कहानियां हिंदी बाल साहित्य की दुनिया में उल्लेखनीय मुकाम स्थापित करेंगी।

समीक्षक : भगवती प्रसाद गौतम

पुस्तक : हंसी का चूरन
लेखक : शादाब आलम
प्रकाशक : लोकोदय प्रकाशन प्रा. लि., लखनऊ
फोन : 9076633657
ईमेल : lokodayprakashan@gmail.com
मूल्य : 120 रुपए

युवा साहित्यकार शादाब आलम का हाल ही में पहला बाल काव्य संग्रह 'हँसी का चूरन' आया है। संग्रह की कविताएं न केवल बच्चों के लिए हैं और उन्हें गुदगुदाती, सिखाती और पढ़ने-सोचने को प्रेरित करती हैं बल्कि हम वयस्कों में भी बच्चों की निश्छल आंखों से दुनिया को देखने और संवारने की निर्दोष इच्छा को पनपाती हैं। संग्रह की पहली ही कविता 'चली गिलहरी गांव' गिलहरी के बहाने शहरों में व्याप्त अजनबीपन व पराएपन से अवगत कराती है। यह उस मनोदशा को भी बहुत संवेदनशील तरीके से खोलती है कि क्यों कोरोना काल में लाखों मजदूरों की तरह गिलहरी भूखे और नंगे पैर पैदल चलकर ही गांव की ओर चल पड़ती है। बच्चे यदि आत्मीय व्यवहार की जरूरत को ऐसी कविताओं के माध्यम से शुरू से ही महसूस कर सकें तो यह दुनिया संभवतः और बेहतर बन सके।

कविता 'दवाखाना' कड़वी दवा के झंझट से बच्चों को बाहर निकालने की बच्चों की ही खूबसूरत तरकीब सुझाती है जिस पढ़कर मजा आता है। 'नाखून मियां' के बार-बार बढ़ जाने और कक्षा में टीचर की डांट दिलाने पर पैदा हुई बाल झुंझलाहट भी गुदगुदाती है। शीर्षक कविता 'हँसी का चूरन' हंसने पर मजबूर करती है। यद्यपि 'तौलिया' जैसी कविता में परिवार में हर किसी के लिए अलग-अलग तौलिए की उपलब्धता को बखान कर कहीं न कहीं उच्च मध्यवर्गीय, अमीर परिवारों की जीवन शैली को स्थापित करती है। पर ऐसे संदर्भ अपवाद में हैं। अपनी संपूर्णता में यह संग्रह लाजवाब है। हिंदी बाल साहित्य की दुनिया जिसमें कम नया लिखे जाने की शिकायत बनी हुई है, वह जरूर इससे समृद्ध होगी।

समीक्षक :आलोक कुमार मिश्रा

पुस्तक : माशी की जीत
लेखक : डॉ. शील कौशिक
प्रकाशक : सहित्यागार, जयपुर
फोन : 0141-2310785
ईमेल : sahityagar@gmail.com
मूल्य : 200 रुपए

डॉ. शील कौशिक साहित्य जगत की बहुआयामी प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। शील जी का बाल साहित्य बालकों के आस-पास के परिवेश से जुड़ा होता है, इसीलिए सीधे उनके मन में उतर जाता है। शील जी का नव प्रकाशित बाल कहानी संग्रह 'माशी की जीत' इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

पुरातन काल से जीव-जंतुओं को लेकर मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कहानियां लिखी जाती रही हैं। आज भी छोटे बच्चे पंचतंत्र की कहानियां बड़े चाव से पढ़ते हैं क्योंकि बच्चे भोले-भाले होने के कारण प्रकृति के बहुत निकट होते हैं और उन्हें पशु-पक्षियों, फूल-पत्तों से विशेष लगाव होता है। लेखिका इस बात को भली प्रकार समझती हैं। अतः उनकी अधिकांश कहानियां पर्यावरण से संबंधित हैं। ये कथाएं हमें पर्यावरण संरक्षण के विषय में बताते हुए जीव-जंतुओं से प्रेम करना भी सिखाती हैं। लेखिका की चेष्टा है कि मानसिक रूप से सबल बनकर बच्चे जीवन में आई हर चुनौतियों का सामना कर सकें।

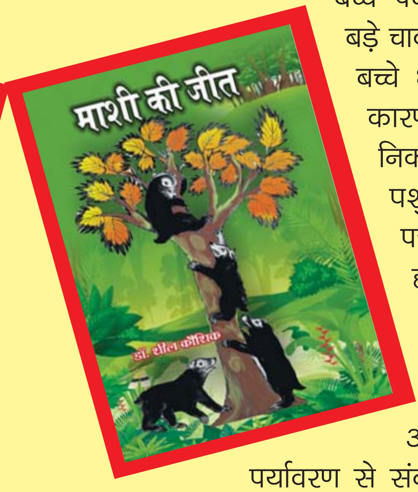

प्रस्तुत संग्रह की समस्त सोलह कहानियां, गागर में सागर की भांति कोई न कोई बड़ी सीख दे जाती हैं किंतु ये शिक्षक की डांट सी कठोर न होकर, पिघलती बर्फ सी शीतलता से भरपूर हैं।

बच्चों के लिए ऐसे संदेशपरक, मार्गदर्शक और मनोरंजक बाल कहानी-संग्रह का बाल साहित्य में भरपूर स्वागत होगा, इसी विश्वास के साथ मैं शील कौशिक जी को हार्दिक बधाई देती हूं। साथ ही उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना भी करती हूं ताकि वह भविष्य में भी उत्कृष्ट बाल साहित्य सृजन करते हुए बाल मन की फुलवारी को महकाती रहें।

समीक्षक : सुकीर्ति भटनागर

मुश्किल हुई आसान

ये सब बातें दो हजार पंद्रह की हैं। मैंने हाईस्कूल की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ पास कर ली थी। किसी तरह अम्मा को मनाकर मैंने शहर के इंटर कॉलेज में एडमिशन ले लिया। गांव से केवल एक ही सहेली नीलम का साथ मिल पाया। हमने अपनी साइकिलें सही करवा लीं।

कॉलेज जाने के लिए मैं नीलम के घर पहुंच जाती थी और कभी नीलम जल्दी तैयार हो जाती थी, तो वह मेरे घर आ जाती थी। कभी किसी की साइकिल अचानक खराब हो जाती थी, तो हम एक ही साइकिल से स्कूल जाते थे। हमारे गांव मुंडेली से खटीमा शहर की दूरी चार किलोमीटर से भी ज्यादा है।

एक दिन हमें देर हो गई। कॉलेज के गेट तक पहुंचते-पहुंचते प्रार्थना की घंटी लगने लगी थी। हमने दौड़कर अपनी कक्षा में बस्ते रखे और वापस दौड़कर अपनी कक्षा की लाइन में खड़े हो गए। प्रार्थना-सभा में समाचार पढ़ने की जिम्मेदारी मेरी ही होती थी। जल्दबाजी में परचा बस्ते में ही रह गया। लेकिन मैं जरा भी नहीं घबराई और याददाश्त से समाचार सुना दिए।

उस दिन हमें आगे की सीट नहीं मिली थी। पहला पीरियड राजनीति विज्ञान का था। मैडम की आदत थी कि वह पीछे बैठी लड़कियों पर ज्यादा ध्यान देती थीं। समझाना खत्म करने के बाद उन्होंने सबसे पहले हमसे ही प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। हम सभी सहेलियों ने उनके सभी प्रश्नों के सही उत्तर बता दिए।

वह खुश होकर बोलीं, "पीछे बैठने वाली लड़कियां तो कभी कुछ बताती ही नहीं, पर तुम सब होशियार हो।"

इंटरवल के बाद खाली पीरियड में जब अधूरा काम पूरा करने के लिए मैंने अपने बैग से इंग्लिश की कॉपी निकालनी चाही, तो मैंने घबराकर पूरा बैग ही उलट दिया, पर इंग्लिश की कॉपी नहीं मिली। किसी ने सुबह मेरी इंग्लिश की कॉपी निकाल ली थी। मैं उदास थी क्योंकि कल ही इंग्लिश की कॉपी जांची जानी थी। अगर मैडम नाराज हो जातीं तो आंतरिक मूल्यांकन में मुझे कम नंबर मिलते।

मैं इससे ज्यादा कुछ और सोच पाती, उससे पहले ही कुसुम और नेहा ने मेरी मुश्किल आसान कर दी। यह मेरी किस्मत थी कि 'न' से नाम होने के कारण मेरी कॉपी जंचने की बारी कल नहीं आने वाली थी, क्योंकि शुक्ला मैडम हमेशा रोल नंबर से ही कॉपी जांचती थीं और वो भी सप्ताह में एक बार।

मैं बच गई और शाम से ही जुट गई, नई कॉपी बनाने के लिए। सबसे पहले काम पूरा करने के लिए कुसुम ने मुझे अपनी कॉपी दी। अगले दिन निशा ने और इस तरह सहेलियों की मदद से कॉपी जंचने का अगला दिन आने तक मेरा इंग्लिश का सारा काम पूरा हो गया।

अपने लेखक को जानिए

नूरे निशाँ : ऊधमसिंहनगर के मुंडेली ग्राम में जन्म। अभी राजनीति विज्ञान से एम.ए. की छात्रा। लेखन, खेल-कूद, नृत्य व बागवानी में रुचि। संस्मरण, पत्र व कविता मुख्य लेखन विधाएं। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। बालसाहित्य लेखन के लिए उत्तराखंड बालकल्याण एवं बाल साहित्य शोध संस्थान, खटीमा, (उत्तराखंड) द्वारा 2016 का इशिता स्मृति युवा प्रतिभा सम्मान ।

सरस्वती पूजा की यादें

यह उन दिनों की बात है, जब मैं कोलकाता में रहता था। वहां खाली जगहों, पार्कों या गलियों में टेंट लगाकर मूर्ति की स्थापना कर पूजा करने की परंपरा है। इन टैंट्स को वहां पंडाल कहते हैं।

हम आठ-दस बच्चों की टोली में सबकी उम्र 8-9 साल तक थी। हम रोज शाम को मिलते और खेलते थे।

तो एक बार चर्चा चली कि हमें पंडाल लगाकर इस बार सरस्वती मां की मूर्ति की स्थापना करनी है।

बात बढ़ी और हम सबके माता-पिता तक पहुंची। और कोई बात होती, तो डांट या मार पड़ जाती। पर मामला पूजा से जुड़ा होने के कारण विरोध नहीं हुआ और इजाजत मिल गई। मैं और मेरे बड़े भाई सबसे अधिक खुश थे। हमें कभी भी घर से बाहर रहने को मौका नहीं मिलता था, न कभी हम रात भर जागे थे। पर इस पूजा के दौरान हमारी इच्छा पूरी होने वाली थी।

अब चंदा जमा करना आरंभ हुआ। हाथ से ही हमने रसीद देने के लिए चंदे की बुक बनाई। बड़ों के सहयोग से चंदा इकट्ठा हुआ। मोहल्ले के बड़े लड़कों ने बांस और कपड़े इकट्ठे किए ताकि पंडाल लगाया जा सके।

अब प्रश्न यह था कि पंडाल कहां लगे। छोटे बच्चों का छोटा पंडाल रोड पर तो लग नहीं सकता था। हमारे मोहल्ले में एक अमीर बंगाली परिवार की कोठी थी। उनकी पसर्नल गली से होकर मुख्य कोठी को इलाका शुरू होता था। उन्होंने अपनी गली के अंत में जहां से उनके बंगले का लान शुरू होता था, वहां पंडाल लगाने की हमें इजाजत दे दी। सामान रखने और रात को आराम करने के लिए एक कमरा भी दे दिया। सब बच्चों में काम बंट गया कि कौन बिस्तर लाएगा, रतजगा के लिए खाना और खेलने के लिए कैरम आदि कौन लाएगा।

अब बड़ों ने पंडाल तैयार कर दिया। उनके साथ जाकर हम एक मूर्ति भी खरीद लाए। हम बच्चों को उत्साह देखते बनता था। सरस्वती पूजा के दिन एक पंडित जी ने विधिवत पूजा करके मूर्ति की स्थापना भी करवा दी। फिर बारी-बारी हम सबने पंडाल में प्रसाद बांटने का काम संभाल लिया। हम सब बड़े खुश थे। खुशा होने का कारण पूजा के अलावा एक और था।

हम में से अधिकांश बच्चे मिडिल क्लास के थे। हमारे घर में खेलने का ज्यादा सामान नहीं होता था। ऐसे में खेल के साथ-साथ रात को तरह-तरह का खाना खाने के लिए मिलने वाला था। अर्थात मां सरस्वती की कृपा हम सब बच्चों पर कई रूप में बरस रही थी।

रात हुई, हम सब खाने बैठे। तरह-तरह के पकवान। भोजन से हम बच्चों का मन तृप्त हो गया। अब दो-दो-बच्चों की पंडाल में बैठने की ड्यूटी लगी। तब तक बाकी बच्चे सो सकते थे या खेल कर जगे रह सकते थे। मैं पूरी रात पंडाल में ड्यूटी देते हुए जागता रहा।

अगले दिन मूर्ति विसर्जन के बाद यह उत्सव संपन्न हुआ। पर आज भी मां सरस्वती की वह पूजा मुझे याद है।

अनिल जायसवाल

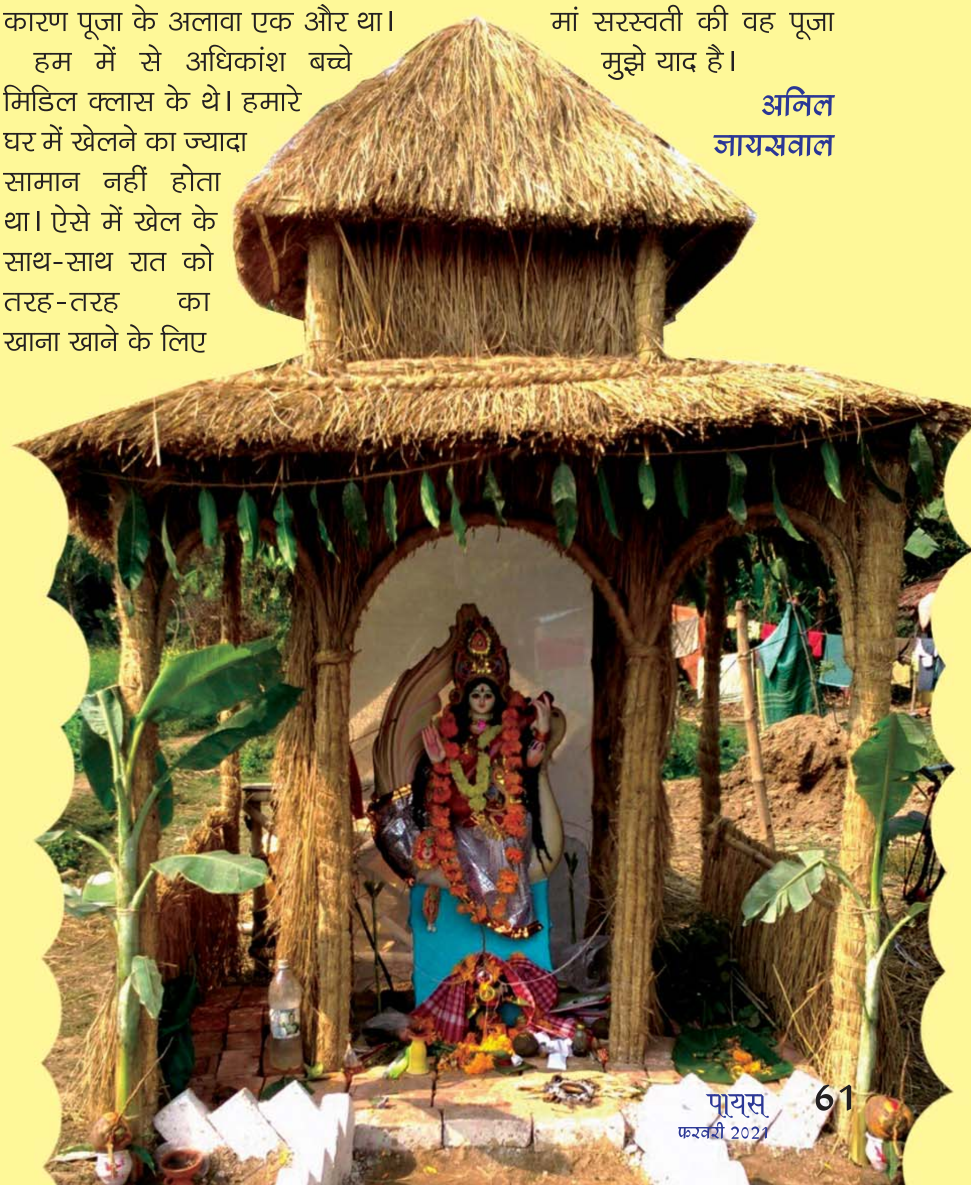

साइकिल रेसिंग

साइकिल का इतिहास बहुत पुराना है। लोगों ने इधर से उधर यात्रा करने के लिए साइकिल का आविष्कार सन 1817 में किया। मजेदार बात यह है कि शुरू में साइकिल का बहुत विरोध हुआ और इसे शैतान की सवारी कहा गया था।

पहली साइकिल रेस : 31 मई 1868 को पेरिस के पास सेंट क्लाउड के इलाके में पहली बार साइकिल रेस का आयोजन किया गया था। इसे एक अंग्रेज जेम्स मोर ने जीता। इसके करीब 18 महीने बाद पेरिस और राइन शहर के बीच में रेस का आयोजन किया गया। करीब 133 किलोमीटर लंबी रेस में 325 लोगों ने भाग लिया। इस दूरी को 10 घंटे 25 मिनट में पूरा कर, फिर से जेम्स मूर ने ही जीत हासिल की।

ब्रिटेन में पहली रेस का आयोजन 1879 में हुआ। इस रेस की खास बात यह थी कि दौड़ के दौरान कई बार साइकिल कारों से आगे निकल जाती थी, क्योंकि 1903 तक वहां की सड़कों पर कारों को 19 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा रफ्तार से चलाने की इजाजत नहीं थी।

इसके बाद साइकिल रेस का कारवां 1890 में बढ़ते-बढ़ते अमेरिका, आस्ट्रेलिया, फ्रांस और जर्मनी तक जा पहुंचा। ये रेस कई-कई दिनों तक चलती थीं। इस बीच इंग्लैंड में नेशनल साइकिल यूनियन का गठन भी किया गया। एक समय ऐसा आया, जब इस यूनियन ने रोड पर साइकिल रेस कराने पर पाबंदी लगा दी। फिर स्टेडियम में साइकिल ट्रैक बनाए गए। इससे लोगों में रोमांच कम हो गया। तब आम लोगों से साइकिल रेसर को अलग करने के लिए उन्हें विशेष कपड़े पहनाए गए, ताकि वे अलग नजर आ सकें।

टूर द फ्रांस रेस : 1903 में पहली बार फ्रांस में साइकिल रेस का आयोजन केवल रोमांच की खातिर किया गया। इसका आयोजन वहां के खेल समाचार-पत्र 'ला ऑटो' के प्रचार के लिए किया गया। पूरे फ्रांस में इस रेस को आयोजित किया गया। रेस की कुल लंबाई 2428 किलोमीटर रखी गई। करीब छह भागों में बंटी और 19 दिन तक चली इस रेस में साठ प्रतियोगियों ने भाग लिया। इसे जीता मौरिस ग्रीन ने।

अगले वर्ष इसे जीतने के लिए साइकिलिस्ट कुछ भी करने को तैयार थे। जांच के दौरान कई प्रतियोगी ट्रेन से साइकिल लेकर पहुंचते पकड़े गए। कई प्रतियोगी कारों में लिफ्ट लेकर रेस के अंतिम भाग तक पहुंचे और फिर साइकिल पर चढ़कर फिनिश लाइन को पार किया। बीच में प्रतियोगियों में मार-धाड़ भी चलती रही। रेस में प्रथम आए पिछले बार के विजेता मौरिस ग्रीन। पर आयोजकों ने गलत तरीका इस्तेमाल करने के आरोप में प्रथम चार प्रतियोगियों को बाहर कर दिया। पांचवें स्थान पर आने वाले हेनरी कोर्नेट को विजेता घोषित कर दिया गया।

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, पर सबके सहयोग से अपनी बात लोगों तक मजबूती से जरूर रख सकता है। अब पायस का दूसरा अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। चाहे वरिष्ठ हों अथवा युवा साथी, सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. मनोहर चमोली 'मनु'
3. राजेन्द्र श्रीवास्तव
4. शादाब आलम
5. गोविंद शर्मा
6. दीप्ति मित्तल
7. गिरिजा कुलश्रेष्ठ
8. मंजुरानी जैन
9. सुधा गुप्ता अमृता
10. उमेशचंद्र सिरसवारी
11. हेमंत यादव शशि
12. तरुण कुमार दाधीच
13. गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

FOR PAYTM
Mobile number **7982014609**
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609

रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

FOR PAYTM
Mobile number **7982014609**
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**